ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

जून 2013
मूल्य 15 रू.

# आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

## अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम उद्घाटन समारोह

आश्रम उद्घाटन समारोह के अवसर पर श्री सुरेन्द्र कुमार बुद्धिराजा (दिल्ली), मा. करतार सिंह (टिकरीकलां, दिल्ली), श्री धर्मवीर सिंह (टिकरीकलां, दिल्ली) को सम्मानित करते हुए स्वामी धर्ममुनि जी, आचार्य विजय पाल जी, स्वामी हरिश मुनि जी, आचार्य मैत्रेय जी एवं योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स।

ओ३म् ओ३म्

# आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

## स्वामी धर्ममुनि जी की मौन साधना

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ व अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम, फर्रुखनगर के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी ने दिनांक 15 मई से 30 जून तक मौन साधना का व्रत लिया है। कृपया इन दिनों में स्वामी जी से फोन द्वारा या कार्यक्रमों में आमन्त्रित करने का कष्ट न करें। विशेष कार्यहेतु सम्पर्क करें- आचार्य राजहंस मैत्रेय, 9813754084, विक्रम देव शास्त्री, व्यवस्थापक, 9896578062

## सम्मानित किया गया

दिल्ली ओपथलमोलोजीकल सोयायटी द्वारा प्रति दो वर्ष में एक नेत्र सर्जन को ओपथलमोलोजी (नेत्र विज्ञान) के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए डा.एस.एन. मितर ओरेसन अवार्ड दिया जाता है।

डा. एस.सी. गुप्ता ने सन् 1972 से अब तक लगभग 30 ओपथलमोलोजी में काम आने वाले सस्ते सुलभ एवं उच्च कोटि के यन्त्रों का आविष्कार करके ओपथलमोलोजी के क्षेत्र में एक प्रकार से क्रान्ति ला दी है।

इसी विशिष्ट योगदान के लिए वर्ष 2013 में डा. एस.सी. गुप्ता, मेडिकल डायरेक्टर, वेणु नेत्र संस्थान एवं अनुसंधान केन्द्र नई दिल्ली को ओपथलमोलोजी के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए डा. एस. एन. मितर ओरेसन अवार्ड से नवाजा गया है। आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में भी आपकी शाखा का संचालन सन् 1970 से लगातार हो रहा है। जिसके माध्यम से हजारों नेत्र रोगियों को लाभ मिला है। आपको सम्मानित किए जाने पर आश्रम की ओर से आपके स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ शुभाशीष। **- स्वामी धर्ममुनि, मुख्याधिष्ठाता आश्रम**

## आत्मशुद्धि पथ के नये आजीवन सदस्य बने

839

**श्री रामभज राठी**
**सैक्टर-2, बहादुरगढ़**

840 **श्री सोमवीर जी,**
**ऑटो मार्केट, बहादुरगढ़**

॥ ओ३म् ॥

# आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

ज्येष्ठ सम्वत् 2070 जून 2013

सृष्टि सं. 1972949113 दयानन्दाब्द 190

वर्ष-12) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-6

(वर्ष 43 अंक 6)

*प्रधान सम्पादक*

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

आचार्य राजहंस मैत्रेय

❖

सह सम्पादक

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, डॉ. मुमुक्षु आर्य

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापकः चन्द्रभान चौधरी

❖

सदस्यता शुल्क

| | | |
|---|---|---|
| संरक्षक | : | 7100 रुपये |
| आजीवन | : | 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए) |
| पंचवार्षिक | : | 700 रुपये |
| वार्षिक | : | 150 रुपये |
| एक प्रति | : | 15 रुपये |

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर.

*कार्यालय* : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,
rajhansmaitreya@gmail.com

## अनुक्रमणिका

| विषय | पृष्ठ सं. |
|---|---|
| आश्रम समाचार | 4 |
| विविध समाचार | 5 |
| वेद सन्देश | 6 |
| सम्पादकीय : ईश्वर की जानकारी नहीं अनुभव की.... | 7 |
| स्वतंत्र कर्मों की परिणति विचित्र भोगों का कारण | 8 |
| ऋषि दयानन्द की देन | 10 |
| सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र | 15 |
| सतत अभ्यास से ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है... | 17 |
| मानसिक रोगों का मनोवैज्ञानिक उपचार | 18 |
| सुखों का मूल | 21 |
| सत्यार्थ-प्रकाश की उपयोगिता | 22 |
| जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि | 24 |
| सच्चे फांसी चढ़दे | 24 |
| हंसो-हंसाओ | 25 |
| बुद्धिमान श्रमिक | 25 |
| वाणी दिव्य महान है | 26 |
| "इन्सानियत ही धर्म" | 26 |
| संतोष की महिमा | 27 |
| सौ वर्षों तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा कर | 29 |
| शराब विरोधी दिवस (26 जून) | 31 |
| साहस एवं समर्पण के ज्वलन्त उदाहरण | 31 |
| दान सूची | 32 |

विज्ञापन दर

| | |
|---|---|
| पिछला कवर पृष्ठ | 5,100 रुपये |
| अंदर का कवर पृष्ठ | 3,100 रुपये |
| पूरा पृष्ठ अंदर | 2,100 रुपये |
| आधा पृष्ठ | 1,100 रुपये |
| चतुर्थ भाग | 600 रुपये |

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

# फर्रुखनगर आश्रम का यज्ञ व मासिक सत्संग सम्पन्न

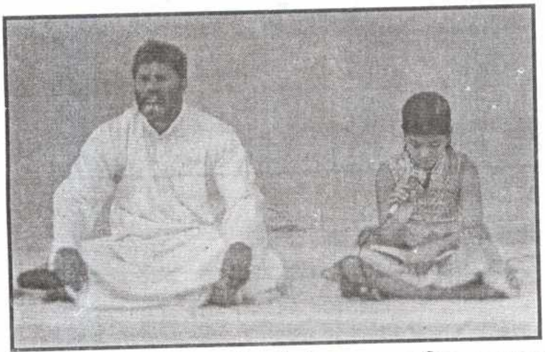

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव का छठा मासिक सत्संग दिनांक 12 मई 2013 को उत्साह और श्रद्धा के साथ सम्पन्न हो गया। प्रात: 9 बजे आचार्य राजहंस मैत्रेय जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ चला। जिसमें श्री अनिल मलिक तथा अन्य यजमानों ने आहुतियां दी। आचार्य जी ने सामूहिक रूप से यजमानों को आशीर्वाद दिलाया। उसके बाद ब्रह्मचारिणी हिमांशी और ब्र. उदयवीर द्वारा सुमधुर एवं प्रेरणादायी भजनों का सुन्दर कार्यक्रम चला। श्री जयनारायण जी वकील ने अपने प्रेरणादायी विचार रखे। धर्मेन्द्र शास्त्री जी ने एक कहानी के माध्यम से प्रभावशाली चर्चा रखी। वानप्रस्थी ईशमुनि जी ने स्वास्थ्य सुधार और यज्ञमहिमा, पर अपने सुन्दर विचार रखे। आचार्य मैत्रेय जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्राचीन ऋषियों को समझ करके अपने भविष्य के सम्यक् निर्माण करना चाहिए और जीवन में प्रसन्न रहने की कला पर विस्तार से प्रकाश डाला। अपने वक्तव्य का उपसंहार करते हुए आगामी कार्यक्रमों की सूचनाएं प्रदान की। शान्तिपाठ के बाद प्रसाद वितरण हुआ।

# मासिक सत्संग में ज्ञान की वर्षा

श्री विश्वनाथ जी आर्य अग्रवाल कालोनी बहादुरगढ के आवास पर महीने के अन्तिम रविवार को मध्याह्नोपरान्त 4.00 बजें से 6.00बजे तक आचार्य राजहंस मैत्रेय जी के ब्रह्मत्व में मासिक यज्ञ संत्संग का आयोजन श्रद्धा और उत्साह के साथ किया गया। मुख्य यजमान श्री विश्वनाथ जी आर्य सपत्नीक अपने परिवार और पुत्र और पुत्रियों के साथ रहे। मन्त्रोच्चारण रवि शास्त्री द्वारा किया गया। यज्ञोपरान्त आचार्य श्री ने सामूहिक रूप से यजमानों को शुभकामनाओं के साथ आशीर्वाद दिलाया। ब्र.उदयवीर ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किया श्री पुरुषार्थ मुनि जी ने ईश्वर विषयक प्रेरणात्मक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उसके बाद रवि शास्त्री ने प्रभावशाली वक्तव्य दिया जिसे सुनकर श्रोतागण प्रसन्न हो गये। आचार्य मैत्रेय जी ने जिज्ञासुओं के प्रश्नों का समाधान करते हुए ध्यान के स्वरूप को सरलता से प्रकट करते हुए कहा कि ध्यान के बिना मानव की गति संभव नहीं। इसलिए साधको को ध्यान के सच्चे स्वरूप को जानकर ही परम शान्ति को प्राप्त किया जा सकता है। उपस्थित श्रोताओं ने दत्तचित्त होकर प्रेरणात्मक वक्तव्यों का श्रवण किया। पास पड़ोस से आये श्रोताओ से प्रांगण भरा हुआ था। शान्ति पाठ के बाद परिवार की ओर से प्रसाद वितरण किया गया।

## सम्पर्क करें

**पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :**

**राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084**

# 511 कुण्डीय जनचेतना महायज्ञ

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत 2070 के शुभागमन के शुभ अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम द्वारा 511 कुण्डीय जनचेतना महायज्ञ का आयोजन मेरठ महानगर के हृदय स्थल पर स्थित महाराणा प्रताप प्रागंण (जिमखाना मैदान) में भव्य रूप से किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा संतशिरोमणि श्रद्वेय स्वामी विवेकानंद जी सरस्वती कुलपति गुरुकुल प्रभात आश्रम थे। अत्यंत भव्य साज सज्जा के साथ विस्तृत विशाल पंडाल में 511 कुण्ड श्रंखला बद्ध रूप से सुसज्जित थे जिन पर लगभग 4044 यज्ञमान व आहूति देने वाले लोग यज्ञ वेदी पर बैठे थे। निश्चित समय पर प्रातः 7:30 बजे श्रद्वेय स्वामी विवेकानन्द जी के ब्रहात्व में यज्ञ आरम्भ हुआ। पीतवस्त्र धारी गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी पवित्र वेद मन्त्रों का पाठ डॉ. सोमदेव शतांशु के निर्देशन में कर रहे थे। 511 कुण्डो में प्रज्ज्वलित अग्नि की लपटे अद्‌भुत दिव्य आभा का दर्शन करा रही थी। कार्यकर्तागण यज्ञकुण्डों में अतिरिक्त समिधा-सामाग्री, घृत आदि की व्यवस्था में सहयोग प्रदान कर रहे थे। ओ३म ध्वजाओं एवं भगवा पटकों से सुसज्जित पहले सभी को वैदिक परम्पराओं एवं संस्कृति की महानता का परिचय करा रहा था।

कार्यक्रम का संयोजन करते हुए मुख्य संयोजक राजेश सेठी ने कहा कि भारत की संस्कृति ही यज्ञ की संस्कृति है। यदि हम नववर्ष का आरंभ यज्ञ जैसे श्रेष्ठ कार्य से करे तो निश्चित रूप से हमारा जीवन अच्छा बनेगा। वैदिक नववर्ष को हमें एक महोत्सव के रूप में मनाना चाहिए। यह सृष्टि का प्रथम दिवस है तथा आज के ही दिन नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी राष्ट्रवादी एवं धर्मनिष्ठ संस्थाओं ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। सभी आर्य समाजों एवं ग्रामीण अंचलों से बड़ी संख्या में पधारे श्रद्वालु जनों ने यज्ञ में भाग लिया। श्री आचार्य डा. वाचस्पति योगेश मुवार, सुशीला बंसल, चन्द्रकांत अजय गुप्ता, अरूण जिंदल, संदीप, पहल विक्रम गर्ग का विशेष सहयोग रहा।

**- राजेश सेठी, मुख्य संयोजक**

# श्रीमती उषा महाजन दिवंगत

श्री सुशील महाजन व्यवस्थापक आर्य सन्देश साप्ताहिक पत्रिका की धर्मपत्नी श्रीमती उषा महाजन का निधन दिनांक 21.04.2013 रविवार को हो गया। श्रीमती उषा महाजन जी अपने जीवन के 77 बसन्त पूरे करके संसार से विदा हो गई। वह अपने पीछे अपने पति श्री सुशील महाजन, वरिष्ठ पुत्र श्री पुनीत महाजन वधू श्रीमती सीमा महाजन, पौत्री कुमारी रिया महाजन, पौत्र ऋषभ महाजन, कनिष्ठ पुत्र श्री परिजात महाजन वधू श्रीमती ऋतु महाजन पौत्र अर्णव महाजन, पौत्री कुमारी अनुष्ठा महाजन, पुत्री श्रीमती पूजा सब लोक, धेवता तुषार सबलोक, धेवती तन्मया सबलाक सहित भरे पूरे परिवार को छोड़ कर गई है। वह आर्य समाज की निष्ठावान सदस्या थी। वाटिका सिटी गुड़गांव में 3 दिन तक श्री कन्हैया लाल आर्य वरिश्ठ उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि, हरियाणा के ब्रह्मत्व में विधान पूर्वक यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में भी कर्णदेव जी पुरोहित, आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के प्रधान आचार्य राजसिंह आर्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री कन्हैया लाल आर्य एवं भजनोपदेशिका श्रीमती सुदेश जी के प्रवचनों से सम्पन्न हुई। श्रीमती उषा महाजन जी की स्मृति में श्री सुशील महाजन जी ने आत्म शुद्धि पथ मासिक की आजीवन सदस्यता श्री कन्हैया लाल आर्य जी की प्रेरणा से प्राप्त की। आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फरूर्खनगर के सभी सदस्य, कार्यकर्त्ता, ट्रस्टी, अधिकारी एवं मुख्य रूप से संचालक श्री स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी, श्रीमती उषा महाजन जी के दिवंगत होने पर हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान कर परम पिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्‌गति एवं परिवार को इस दुःख को सहन करने की प्रार्थना करते हैं।

**-कन्हैया लाल आर्य, ट्रस्टी**

# संस्कर्ता, बलदाता, शतक्रतु

**- डॉ. रामनाथ वेदालंकार**

**इष्कर्तारमनिष्कृतं सहस्कृतं, शतमूर्तिं शतक्रतुम।**
**समानमिन्द्रमवसे हवामहे, वसवानं वसूजुवम्॥**

ऋग् 8.66.5

ऋषि: **नृमेधः आङ्गिरसः** देवता इन्द्रः। छन्दः **पंक्तिः।**

**(इष्कर्तारं)** (अन्यों को) संस्कृत करनेवाले **(अनिष्कृतं)** (स्वयं स्वभावतः शुद्ध होने के कारण किसी से) संस्कृत न होनेवाले, **(सहस्कृतं)** बल देनेवाले, **(शतमूऊतिम्)** शत रक्षाओंवाले, **(शत-ऋतुम्)** शतप्रज्ञ, शतकर्मा एवं शतयज्ञ **(वसवानं)** वस्त्रों से अच्छा, दत करने वाले, **(वसु-जुवं)** ऐश्वर्यों को प्रेरित करनेवाले, **(समानं)** सबके एक-समान (आराध्य) **(इन्द्रं)** परमैश्वर्यवान् परमात्मा को **(अवसे)** रक्षा के लिए **(हवामहे)** (हम) पुकारते हैं।

हम इस विश्व में बहुत ही असुरक्षित हैं। प्रथम तो न जाने कब कौन-सी विपत्ति आ खड़ी हो और हमें मृत्यु का ग्रास बना ले, फिर समाज में फैले पाप और दुर्व्यसन भी क्या मालूम कब हमें अपने प्रभाव में ले लें। और उनमें फँसकर हम विनाश की ओर दौड़ने लगें। अतः स्वयं को हम ऐसी सत्ता के प्रति सौंप देना चाहते हैं, जिससे हमें सुरक्षा का पूर्ण अभयदान मिल सके। वह सत्ता परमैश्वर्यशाली इन्द्र प्रभु ही है। वह प्रभ 'इष्कर्ता' है, असंस्कृतों को संस्कृत करनेवाला है, जिनके मन, बुद्धि आदि संस्कारहीन हैं, उन्हें परिमार्जित-परिष्कृत कर उनमें सद्गुणों का बीजारोपण करनेवाला है। स्वयं वह 'अनिष्कृत' है, स्वभावतः शुद्ध होने के कारण उसे किसी से संस्कृत होने की आवश्यकता नहीं है। वह 'सहस्कृत' है, उत्साहहीनों में साहस और बल को प्रेरित करनेवाला है। उससे शक्ति पाकर निर्बल-से-निर्बल व्यक्ति भी समरांगण के सूत्रधार बन जाते हैं। वह 'शत-ऊति' है, अपनी सैकड़ों रक्षाओं को लेकर सहायतार्थ मनुष्य के पास पहुँचनेवाला है।

वह शत ऋतु है, शतकर्मा है, शतप्रज्ञ है, शतयज्ञ है। सृष्टि के अनन्त कर्मों को वह अकेला कर रहा है, सृष्टि के सर्जन और संचालन में ही उसकी अनन्त प्रज्ञा के भी दर्शन होते हैं। उसके लोकोपकार-रूप, यज्ञ-कार्य भी गणनातीत हैं। वह 'वसवान' है, वस्त्रहीनों को वस्त्रों से आच्छादित करनेवाला है, गुणहीनों को सद्गुणों से आच्छादित करनेवाला है। वह 'वसुजू' है, ऐश्वर्यहीनों के प्रति ऐश्वयो को प्रेरित करनेवाला है। वही अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, सूर्य, द्युलोक, चन्द्रमा और नक्षत्र, इन आठों वसुओं को गति देनेवाला है। वह 'समान' है, निष्पक्ष होकर सबके प्रति एक-समान न्यायानुकूल व्यवहार करनेवाला है और सबका एक-समान आराध्य-देव है। ऐसे महान् इन्द्र परमेश्वर को हम रक्षार्थ पुकारते हैं, क्योंकि जो जितना महान् है वह उतना ही अधिक निरापद रूप से रक्षक हो सकता है। हे जगत् के सम्राट इन्द्र! तुम हमें पूर्ण रूप से अपनी रक्षा में ले लो।

**-वेद मंजरी से**


## आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2000/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

# सम्पादकीय ईश्वर की जानकारी नही अनुभव की आवश्कता है।

ईश्वर की जानकारी में प्रायः लोग लगे हुए हैं, जो आवश्यक तो है परन्तु पर्याप्त नहीं। उसकी जानकारी आसान है परन्तु अनुभूति कठिन है। इसलिए लोग उसकी जानकारी में ही संलग्न हैं और केवल जानकारी से ही संतोष प्राप्त करने की कोशिश में है। जिसमें सफलता हाथ नहीं लगती और लगती भी है तो केवल जानकारी में पूर्ण संतोष प्राप्त नहीं होता। कहीं न कहीं असंतोष का काटा चुभा ही रहता है। कुछ लोग परमात्मा की जानकारी को ही परमात्म अनूभूति समझने का पूरा प्रयास करते हैं, जिन्हें बाद में अपनी भूल का अनुभव होता है। ईश्वर के सम्बन्ध में जानकारी और उसकी अनुभूति में बहुत मौलिक अन्तर है जो समझने योग्य है। जानकारी स्मृति है जिसमें अनुभूति नाम की कोई बात ही नहीं होती। यह अतीत की स्मृति संगृहीत होती है जिसमें चित्त या मन पूर्व स्मृति को उभारकर दिखाता है। जो थोथी होती है। जानकारी में केवल पूर्व लोगो की सूचनाएं है जो हमारे लिए एक संकेत का कार्य करती हैं इससे ज्यादा कुछ नहीं। अनुभूति, वर्तमान काल में जो बोध हो रहा है उसका अनुभव है। यह स्मृति नही है। यह तो साक्षात अनुभव है। जहां स्मृति और चिन्तन ठहरा हुआ होता हैं। अनूभूति सदैव वर्तमान काल में होती है। जो साधक के जीवन को आनन्द अतिरेक से भर देती है अनुभूति काल में साध क सभी तरह की समस्याओं से पार होता है। यदि हम समस्याओं में उलझे हैं तो इसका सीधा सा अर्थ है कि हमें ईश्वर का वर्तमान काल में कोई बोध नही हो रहा। ईश्वर साक्षात्कार या ईश्वरानुभूति में सभी सांसारिक विषयों का अनुभव या उनकी स्मृति रुक जाती है। ईश्वर अनुभूति या तो सतत होती है या बिल्कुल नहीं होती। ईश्वर को ऐसा नहीं कहा जा सकता कि मैने उसे जान लिया है। या जानने का कोई दाबा करे कि मैं उसे जान गया हूं, इससे सिद्ध होता है कि वह भूतकाल में कभी जाना था अब उसे अनुभव नही कर पा रहे। अनुभूति को भूतकालिक नहीं बनाया जा सकता। वह तो निरन्तर अनुभव की अवस्था है । वहां अनुभूति का सातत्य है। वह जानकारी की तरह प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। इसलिए उसकी अभिव्यक्ति में अनुभूति टूट जाती है। इस सम्बन्ध में उपनिषद में बड़ा ही सुन्दर कहा गया है-**यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः। अविज्ञातं विज्ञानतां विज्ञातमविजानताम् ॥ 2/3॥** केन उपनिषद अर्थात् जिसने यह समझ लिया है कि वह उसे नहीं जान सका, उसने उसे जान लिया है और जिसने यह समझ लिया है कि वह उसे जान गया, वह उसे नहीं जानता। जानने वालों के लिए वह अविज्ञात है। न जानने वालों के लिए वह विज्ञात है, यानि जाना हुआ है। क्योकि उसके विषय में यही जाना जा सकता है कि वह जाना ही नहीं जा सकता।

ईश्वर की अनुभूति के टूट जाने पर थोथी स्मृति कार्य करती हे । जो साधक को कभी भी तृप्त नहीं कर पाती साधक अशान्त और बेचेन ही बना रहता है। यदि साधक परमात्म अनुभव में निरन्तर डूबा रहता है तो वह आनन्द में रहता है। यदि वह नही डूबता तो वह उदास और बैचेनी में रहेगा। और वह अनुभूति के लिए छटपटाता रहेगा। परमात्म अनुभव को जानकारी की तरह नहीं लिया जा सकता क्योंकि वह परम अनुभूति का सातत्य है। जिसके बिना हम प्रकृति के विकारों के संसर्ग में बने रहते हैं। जहां अशाति और बैचेन ही प्रमुख होती है, ईश्वर कोई वस्तु की तरह भी नहीं लिया जा सकता, जिसे जान कर छोड़ दिया जाए। वस्तु या पदार्थ को जानकर छोड़ दिया जाता है परन्तु ईश्वर को नहीं। ईश्वर की अनुभूति लगातार चलती है। उसमे साधक हर समय आत्मगत रूप से डूबता है। डूबने के बाद उसे कहने की चेष्टा में ,उससे सम्पर्क टूट जाता है। अतः साधक को इसमें एक तरह से पूरा समर्पित रहना पड़ता है इसी को आत्म स्मरण या आत्मसाक्षात्कार कहा जाता है ज्ञान, बोध, अनुभव ये पर्याय वाची शब्द हैं। इन शब्दों में परमात्मा के साथ तल्लीनता की अभिव्यक्ति नहीं होती। इससे ऐसा लगता है जैसे परमात्मा में हम कभी डूबे थे फिर वह हमसे खो गया। इन शब्दों में परमात्मा का भूतकालिक ज्ञान है। जो मात्र थोथी स्मृति में रहता है और स्मृति

( शेष पृष्ठ 19 पर )

# स्वतंत्र कर्मो की परिणति विचित्र भोगों का कारण

-राजहंस मैत्रेय, आचार्य आत्मशुद्धि आश्रम

## सांख्य दर्शन-गतांक से आगे-

पिछले अंक में जैसे श्वेत वस्त्र को रंग देने पर उसकी श्वेतता का दूर होना और बीज की अंकुर जननशक्ति अग्नि से दग्ध कर देने पर, दूर होने के समान आत्मा के बन्ध के स्वरूप के सम्बन्ध में कहा गया है। अब अगले सूत्र में इसका व्यवहारिक समाधान किया गया है -

**शक्त्युद्भवानुद्भवाभ्यां नाशक्योपदेशः ॥11॥**

**पदार्थ- शक्त्युद्भवानुद्भवाभ्याम्**=इन दो उदाहरणों में शक्ति के प्रकट और अप्रकट होने से **अशक्योपदेशः**=आत्मा के बन्ध की निवृत्ति का अशक्य उपदेश **न**= नहीं अर्थात इन दो उदाहरणों में शक्ति के प्रकट और अप्रकट से आत्मा के बन्ध की स्थिति का न हो सकने वाला उपदेश नहीं। श्वेत वस्त्र में श्वेतता रूप शक्ति प्रकट रहती है । किसी दूसरे रंग से रंग देने पर श्वेतता रूप धर्म दब जाता है और दूसरा रंग उस पर चढ जाता है श्वेतता का सर्वथा नाश नही होता विधिपूर्वक धौने से फिर से श्वेतता प्रकट हो जाती है इसी प्रकार बीज की अंकुर जनन शक्ति को अग्नि संयोग से तिरोहित किया जा सकता है और पुनः वैज्ञानिक उपायों द्वारा उसको पुनः प्रकट किया जा सकता है इसलिए आत्मा के बन्ध को स्वाभाविक न मान कर नैमित्तिक मान लेने पर समस्या का समधान हो जाता है और न हो सकने वाला उपदेश भी नहीं बनता।

अब आगे के सूत्रों में क्रमशः आत्मा को बन्धन में डालने वाले निमित्त पर विचार किया गया है किस निमित्त से आत्मा बन्धन में पड़ता है। सर्व प्रथम काल विचार किया है कि-

**न कालयोगतो व्यापिनो नित्यस्य सर्वसम्बन्धात्॥12॥**

**पदार्थ-कालयोगतः**=काल योग से आत्मा का बन्ध **न**= नहीं **व्यापिनः नित्यस्य** = व्यापी नित्य आत्मा का **सर्वसम्बन्धात्**=सर्व काल में सम्बन्ध होने से अर्थात् काल योग से भी आत्मा का बन्धन नहीं क्योकि व्यापी नित्य आत्मा का सर्वकाल में समान रूप से सम्बन्ध रहता है।

यहां आत्मा के बन्धन का मूल कारण क्या हो सकता है इस विषय में शंका की जाती हे कि कहीं आत्मा का बन्धन का कारण काल तो नहीं इसके उत्तर में सूत्रकार कहते हैं कि आत्मा सभी कालों में समान रूप से रहती है इस व्यापी नित्य आत्मा का सम्बन्ध मोक्ष और बन्ध दोनों ही कालों में बराबर रहता है काल बन्धन का कारण तभी माना जा सकता है जब आत्मा क़ा अस्तित्व कभी हो और कभी न हो इसलिए आत्मा को बन्धन में लाने का कारण काल को नहीं माना जा सकता क्योंकि आत्मा तो नित्य व्यापी है काल को सांख्य शास्त्र में स्वतन्त्र भी स्वीकार नहीं किया यहां पुरुष प्रकृति को ही अनादि माना गया हैं। इसलिए काल का आत्मा के अतिरिक्त अलग कोई अस्तित्व नहीं। जो आत्मा का बन्धन का कारण बन सके। यदि काल का अस्तित्व मान भी लिया जाए तो भी आत्मा का बन्ध और मोक्ष में समान रूप से सम्बन्ध होने के कारण काल आत्मा के बन्ध का कारण नहीं हो सकता।

अब क्या देश स्थान को आत्मा का बन्ध का कारण माना जा सकता है कपिल मुनि इस सूत्र द्वारा इसका उत्तर देते हैं।

**न देशयोगतोऽप्यस्मात् ॥13॥**

**पदार्थ- देशयोगतः**=देश [स्थान] योग से आत्मा का बन्ध **न**= नहीं **अस्मात्** = इस कारण से **अपि**= भी अर्थात् देशयोग से भी आत्मा का बन्ध नहीं माना सकता ऊपर कहे हुए हेतु के कारण ।

आधुनिक खोजों में समय और स्थान को एक ही वस्तु के दो आयाम स्वीकार किया गया है। इनका अलग अस्तित्व नहीं हैं। जैसे ही शरीर के साथ आत्मा का सम्बन्ध बनता है तो शरीर के साथ पहला अनुभव कहां? कब से? का प्रश्न खड़ा होता है। इसके उत्तर में वस्तुतः स्थान और समय का भाव उत्पन्न हो जाता है। जो व्यवहारिक है। यथार्थ में इनकी कोई सत्ता नहीं । इसलिए देशयोग को भी आत्मा का बन्ध का कारण स्वीकार नही किया जा सकता । पूर्व सूत्र में नित्य व्यापी आत्मा का बन्ध नहीं माना जा सकता क्योंकि आत्मा सर्वत्र गति करता है वह किसी स्थान विशेष से बंधा हुआ नहीं है। देश का भी सर्वत्र सम्बन्ध होने से आत्मा के बन्ध का कारण नहीं माना जा सकता। देश का बन्ध और मोक्ष दोनो ही अवस्थाओ में आत्मा के साथ बराबर सम्बन्ध रहता है आत्मा की गति का उपनिषद आदि शास्त्रों में पर्याप्त वर्णन उपलब्ध है। इसलिए मोक्ष अवस्था में भी आत्मा का देश से संबंध रहता है यदि देश को आत्मा का बंध का कारण माना जाये तो मोक्ष में भी बंध हो जायेगा जो संम्भव नही इसलिए देशयोग को भी आत्मा का बंध का कारण नहीं माना जा सकता।

यदि काल और देश को आत्मा का बंध नहीं माना जा

सकता तो क्या अवस्था को आत्मा का बन्ध माना जा सकता है? इसका उत्तर यहां दिया जा रहा है-

**न अवस्थातो देहधर्मत्वात्॥14॥**

पदार्थ- **अवस्थातः**=अवस्था से आत्मा का बन्धन **न**=नही **तस्याः**=उस अवस्था का **देहधर्मत्वात**=शरीर से सम्बन्ध होने से। अर्थात् बाल्य युवा वृद्ध अवस्था शरीर का धर्म होने के कारण आत्मा के बन्ध के कारण नहीं।

शरीर आत्मा के बन्ध के बाद आता है। आत्मा का बन्ध शरीर के प्राप्त होने से पूर्व ही हो गया। फिर शारीरिक बाल्य, युवा, वृद्ध अवस्थाओं से आत्मा का बंध मानना हास्यास्पद ही होगा, क्योकि शारीरिक अवस्थाएं शरीर का धर्म हैं शरीर का धर्म आत्मा का बन्धन का कारण बने। यह ऐसे ही होगा जैसे चिमटे को पकड़कर पुनः चिमटे से अपने हाथ को पकड़ना जो सम्भव नही। शरीर में विभिन्न अवस्थाएं देखने को मिलती हैं। बाल्य, युवा, वृद्ध, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, स्थूल, कृश, दुर्बल आदि इनका पूरा सम्बन्ध शरीर से है न कि आत्मा से। आत्मा शरीर को प्राप्त करने से ही पूर्व बन्धन में आ चुका था बंध पहिले है शरीर बाद में। इसलिए शारीरिक अवस्थाएं आत्मा के बंधन का कारण नही हो सकती। शरीर की अवस्थाएं अचेतन प्रकृति का परिणाम है अचेतन प्रकृति के परिणाम से चेतन आत्मा का बन्धन नही क्योकि अचेतन के परिणाम से चेतन का कोई सम्बन्ध नहीं यदि अचेतन के परिणाम से चेतन में परिणाम स्वीकार कर लिया जाये तो मुक्त आत्मा भी बन्धन में आनी चाहिए जबकि ऐसा नहीं होता अतः अचेतन धर्मपरिणाम स्वरूप अवस्था आत्मा के बंधन का कारण नहीं हो सकती।

अब प्रश्न होता है कि यदि अवस्था को पुरुष का धर्म मान लिया जाए तो क्या आपत्ति? इसी का उत्तर दिया गया है

**असंगोऽयं पुरुष इति॥15॥**

पदार्थ-**अयम्**=यह **पुरुष**= आत्मा **असंगः**=एक रस नित्य है **इति**=इसलिए ये अवस्थाएं पुरुष का धर्म नहीं मानी जा सकती। अर्थात् यह आत्मा एकरस कूटस्थ नित्य है। इसलिए शरीर की अवस्थाओं को आत्मा में स्वीकार नहीं किया जा सकता यानि ये अवस्थाएं आत्मा की धर्म नहीं हो सकती।

यह देखा जाता है कि प्रकृति से बने हुए सभी पदार्थ परिवर्तनशील हैं उनकी भिन्न अवस्थाएं होती हैं। प्रकृति से बने सभी पदार्थ परिणाम को प्राप्त होते हैं। परन्तु पुरुष एकरस होने के कारण कभी परिणाम को प्राप्त नहीं होता। अतः शारीरिक धर्म और अवस्था पुरुष के बन्ध में निमित्त नहीं हो सकती। क्योंकि शरीर आदि की अवस्थाएं पुरुष को बन्धन में नहीं डाल सकती।

यदि देह अवस्थाएं पुरुष में बन्ध के कारण नहीं, तो क्या शुभ अशुभ कर्मो से आत्मा का बन्ध संभव है। इस सूत्र द्वारा उत्तर दिया गया है।

**न कर्मणाऽन्यधर्मत्वादतिप्रसक्तेश्च ॥16॥**

पदार्थ- **कर्मणा**=शुभ अशुभ कर्मो द्वारा पुरुष को बन्ध **न**= नहीं हो सकता क्योंकि वह **अन्यधर्मत्वात्**=कर्म पुरुष का धर्म नहीं **च**=और **अतिप्रसक्तिः** =अति प्रसक्ति दोष होगा ।

अर्थात् शुभ अशुभकर्मों से भी पुरुष को बन्ध नही हो सकता क्योंकि शुभ अशुभ कर्म शरीर अन्तःकरण के धर्म हैं। इससे तो अन्य के धर्म से अन्य को बन्ध स्वीकार करने में मुक्त आत्माओं का भी बन्ध स्वीकार करना पड़ेगा जो अति प्रसक्ति दोष है। अर्थात् ऐसा संम्भव नहीं है।

आत्मा का बन्ध तो शरीर और अन्तःकरण आदि की प्राप्ति से पूर्व ही हो चुका होता है फिर शरीर को अन्तःकरण आदि से उत्पन्न होने वाले शुभ और अशुभ कर्म आत्मा के बन्ध का कारण कैसे हो सकते हैं। शुभ अशुभ कर्म तो आत्मा के सचेत और अचेत अवस्था में शरीर और अन्तःकरण के द्वारा सम्पन्न होते हैं। आत्मा के पूर्व बन्ध की अवस्था से उत्पन्न होने वाले शुभ अशुभ कर्म तो आत्मा के बन्ध का निमित्त नहीं हो सकते। यदि ऐसा मान भी लिया जाये तो अति प्रसक्ति दोष अर्थात् अन्य के धर्म से अन्य का बन्ध स्वीकार करने पर मुक्त अवस्था में भी बन्ध माननी पड़ेगी। जो कभी स्वीकार्य नहीं।

अब अन्य के कर्मो से अन्य को बन्ध होने में दूसरे भी दोष उत्पन्न होते हैं जिसको अगले सूत्र द्वारा कहा गया है।

**विचित्रभोगानुपपत्तिरन्यधर्मत्वे॥7॥**

**पदार्थ- अन्य धर्मत्वे**=एक कर्म द्वारा दूसरे की फल प्राप्ति में **विचित्रभोगानुपपत्तिः**=विचित्र भोगों की प्राप्ति नहीं हो सकती।

अर्थात् एक के कर्म द्वारा दूसरे की फल प्राप्ति में जीवात्माओं को सुख दुख की विलक्षणता नहीं हो सकती।

जगत् में गहराई से देखने पर बड़ी ही विचित्र लीला दिखाई देती है। कोई सुखी है। तो कोई दुखी है। कहीं जन्म है, तो कहीं मृत्यु है। कोई मर रहा है, तो कोई मार रहा है। एक दूसरे पर प्राणी घात लगाए बैठे हैं। इस विचित्र लीला में कर्म करने की स्वतंत्रता है, तो भोगने की भी परतंत्रता है। यदि अन्य कर्मो का परिणाम अन्य को प्राप्त हों ,तो विचित्र भोग, कर्मफल की विचित्रता नहीं होनी चाहिए। जबकि यह विचित्रता संसार में दृष्टि गोचर हो रही है। सभी जीव सुखी या दुखी होने चाहिए परन्तु ऐसा नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि अन्य के कर्मो के द्वारा आत्मा के बन्ध का कारण कोई अन्य ही है।

# ऋषि दयानन्द की देन

– श्री पं गंगाप्रसाद उपाध्याय एम.ए.

मानव जाति के कार्यक्षेत्र के दो विभाग हैं। एक पुरुषार्थ और दूसरा कृत्वर्थ। पुरुष अपने जीवन के अन्तिम घोष के लिए जो कुछ करता है वह पुरुषार्थ है और पुरुषार्थ के साधन रूप जो रात-दिन धर्माचरण है वह कृत्वर्थ है।

ऋषि दयानन्द ने मनुष्यमात्र के कल्याणार्थ पुरुषार्थ तथा कृत्वर्थ दोनों विभागों पर अपने उपदेश तथा व्यवहार से बहुत कुछ प्रभाव डाला है।

पुरुष का अर्थ या परम उद्देश्य ब्रह्म की प्राप्ति है:

**तद् विष्णो परमं पदं सदा पश्यन्तिः सूरयः दिवीव चक्षुरातमम्।** ऋग्वेद 1.22.20। ''जिस प्रकार स्वस्थ आँखें सूर्य के प्रकाश से आनन्दित होती हैं उसी प्रकार शिक्षित मनुष्य ईश्वर की ओर टकटकी लगाये रखता है।'' स्वामी दयानन्द की सबसे बड़ी देन यह है कि कुसंस्कारों के कारण लोग ईश्वर की पूजा से विमुख हो गये थे। स्वामी दयानन्द ने ईश्वर-पूजा विषयक समस्त भ्रान्तियों को दूर कर दिया।

यह बात नहीं कि स्वामी दयानन्द से पूर्व ईश्वर-पूजा न थी या ईश्वर-पूजक न थे। ईश्वर-पूजा न होती तो इतने मतमतान्तर न होते। परन्तु स्वामी दयानन्द ने यह चेतावनी दी कि जिसको तुम ईश्वर कहते हो वह वास्तविक ईश्वर नहीं, अपितु कल्पित ईश्वर है। कुम्हार कृष्ण की मूर्ति बनाता है और अभिमान से कहता है कि मैंने कृष्ण ही आकृति या प्रतिकृति बना दी। वह कृष्ण की मूर्ति नहीं है। कृष्ण ऐसे न थे। यह कुम्हार की कल्पना शक्ति का फल है।

'आर्य समाज' के दूसरे नियम में स्वामी दयानन्द ने ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव का प्रतिपादन किया है- ''ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकर, सर्वशक्तिमान्, दयालु, अजनमा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।''

उपर्युक्त नियम में स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट कर दिया है कि ईश्वर के स्थान में अन्य पूजाओं का प्रचार करके लोगों ने ईश्वर-पूजा को सर्वथा भुला दिया। ईश्वर अजर-अमर है। परन्तु हमने उनकी पूजा की जो न अजर थे, न अमर। ईश्वर निर्विकार है। परन्तु हमने उन नदी या पहाड़ों या पत्थरों की पूजा की जो विकार के वशीभूत हैं। मनुष्य को सच्चे ईश्वर का उपासक बना देना स्वामी दयानन्द की मुख्य देन है। तुलना कीजिए।

ईश्वर के सम्बन्ध में एक और विशेष बात स्वामी दयानन्द ने कह दी कि उपासक जीव और उपास्य ब्रह्म का सीधा साक्षात् सम्बन्ध है। हर जीव में ईश्वर व्यापक है। हर जीवन ईश्वर के साथ है। इसलिए पैगम्बर आदि माध्यम की आवश्यकता नहीं। उपासक मजदूरी देकर अपने स्थान में दूसरे से उपासना नहीं करा सकता। जो लोग ब्राह्मणों को कुछ धन देकर, दुर्गापाठ आदि कराते हैं उनको उस पाठ से कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं होगा।

स्वामी दयानन्द से पूर्व मनुष्य के जीवन के दो भाग थे। धर्म और जगद् व्यापार। धर्म का अर्थ था पूजापाठ अर्थात् ईश्वर वा किसी देवी-देवता नाम का जाप और उसकी प्रतिमा को पूजा। खेती, व्यापार या धन कमाने के साधनों का नाम था जगद् व्यापार या दुनियादारी। इस प्रकार लोक और परलोक एक-दूसरे के विरुद्ध समझे जाते थे। यह प्रसिद्ध था कि लोक बनाओगे तो परलोक नष्ट होगा। परलोक बनाना इष्ट है तो लोक को त्यागना पड़ेगा। स्वामी दयानन्द ने बताया कि परमात्मा ने लोक और परलोक के मध्य कोई दीवार खड़ी नहीं की। लोक और परलोक के बीच नैरन्तर्य है। बिना लोक के परलोक बन ही-नहीं सकता। सब जप, तप पूजापाठ लोक में ही तो करना है और जिस लोक से परलोक नहीं बनता वह लोक भी अधूरा है। स्वामी दयानन्द ने लक्षण बताने में महर्षि कणाद की पद्धति को स्वीकार किया है-

**'यतोभ्युदयनिश्रेयस् सिद्धिः सः धर्मः।''**

वैशेषिक दर्शन (1.1.12)

कणादादि मुनि आधिभौतिक जगत् की व्याख्या करना चाहते थे। उनको भय था कि आध्यात्मवादी

उनको नास्तिक न कह दें। अत: उन्होंने आरम्भ में ही यह बता दिया कि धर्म वह है जिसमें अभ्युदय और निश्रेयस् दोनों की सिद्धि हो। मैं इस सूत्र का अर्थ कुछ भिन्न करता हूँ। मैं सूत्र के बताये हुए अभ्युदय और निश्रेयस् में समुच्चय नहीं मानता। इसमें साधन और साध्य का सम्बन्ध है। मनु महाराज ने धर्म के जो दस लक्षण गिनाये हैं वे सब इस लोक में बताये हैं। स्वामी दयानन्द ने धर्म की यह उदार व्याख्या करके स्पष्ट कर दिया कि चमार भंगी भी अपना गंदा काम करता हुआ धार्मिक है, और एक वेदज्ञ भी कुचेष्टा करके धर्मच्युत समझा जाना चाहिए। स्वामी दयानन्द ने धर्म के उदार अर्थ लेकर मनुष्य के सांसारिक जीवन को भी धर्म के अन्तर्गत कर दिया। अब धर्म में वह दैनिक व्यवहार भी सम्मिलित हो गया जो हम अहर्निश एक-दूसरे के साथ किया करते है। इस प्रवृत्ति परिवर्तन से हम अपने रस्मोरिवाज पर भी विचार करने लगें। मध्यकालीन आचार्यो ने धार्मिक, दार्शनिक, पारलौकिक बातों का भी उल्लेख किया है परन्तु समाज सम्बन्धी त्रुटियों का नहीं। श्री शंकराचार्य जी महाराज ने जैनियों के अन्यान्य मतों का खण्डन किया। एक ब्रह्म की स्थापना की। वेदों का पक्ष लिया। पर, बाल-विवाह, विधवा-विवाह के निषेध जाति-उपजाति भेद, छूत-अछूत, भक्ष्य-अभक्ष्य के प्रश्न को छुआ तक नहीं। रामानुज आदि अन्य आचार्यो ने भी अपने आन्दोलनों को केवल मन्दिरों तक ही सीमित रखा। यह तो किसी ने नहीं किया कि स्त्रियों और शूद्रों को भी पढ़ाना चाहिए या हिन्दुओं के बाहर अन्य मतावलम्बियों को भी अपने धर्म में निमंत्रित करना चाहिए या अन्य देशों में भी वेदों का प्रचार करना चाहिए या प्रचारार्थ दूसरे देशों में भी जाना चाहिए। यह स्वामी दयानन्द की शिक्षा की ही विशेषता है कि उन्होंने वैदिक धर्म को दुनिया के लिए इतना ही आवश्यक बताया जितना सूर्य का प्रकाश। स्वामी दयानन्द ने इस बात पर बड़ा बल दिया है।

स्वामी दयानन्द की एक बड़ी देन यह थी कि उन्होंने बहुत दिनों से भूले हुए वेदों का फिर से उद्बोधन कराया। यों तो समस्त हिन्दू सम्प्रदाय वेदों से सम्बन्ध रखते थे। वास्तविक न सही नाममात्र का ही सही। परन्तु स्वामी जी वेदों को हर अर्थ में धर्म का मूल बताया है। प्राय: हिन्दुओं का यह विचार था कि वेद हैं तो ईश्वरीय ज्ञान, पर वेद कलयुग के लिए नहीं है। श्री राममोहन राय जी ने जब ब्रहाा समाज को स्थापित किया तो उनकी इच्छा थी कि वेदों का सहारा लेना चाहिए। परन्तु उनके समकालीन बंगाली पण्डितों ने वेदों के विषय में कुछ उनका प्रोत्साहन नहीं दिया और राजा राममोहन राय ने अपने धार्मिक सुधार के लिए केवल उपनिषदों को ही आधार बनाया। इसका एक विशेष कारण यह भी था कि स्वामी शंकराचार्य जी वेदों को प्रामाणिक मानते हुए भी अपने सिद्धान्त की पुष्टि में केवल उपनिषदों के ही प्रमाण देते हैं, और वेदों का यदि कहीं उल्लेख भी करते हैं तो अत्यन्त साधारण रीति से।

इसका भी एक कारण था। प्रसिद्ध यह था कि वेद कर्मकाण्ड का विषय है और उपनिषद् ज्ञान और उपासना काण्ड का। कर्मकाण्ड का अर्थ था केवल यज्ञ काण्ड। उसका सम्बन्ध याज्ञिक क्रियाओं से था, न कि सदाचार आदि यम-नियमों से।

स्वामी दयानन्द ने कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड और उपासनाकाण्ड को मिला दिया। प्राय: यह प्रसिद्ध है कि तीन मार्ग हैं- (1) ज्ञान मार्ग, (2) कर्ममार्ग, (3) उपासना मार्ग।

मेरी सम्मति में मार्ग शब्द भ्रान्तिमूलक है और काण्ड शब्द का पर्याय नहीं हो सकता। तीन मार्ग और तीन काण्डों में भेद है। मार्ग वैकल्पिक होते हैं और काण्ड पूरक। उदाहरण के लिए यदि लखनऊ से दिल्ली जाने के लिए तीन मार्ग हैं तो यात्री तीनों मार्गो का अवलंबन नहीं करेगा। एक का करेगा और दो को छोड़ देगा। इसलिए हिन्दू विद्वान एक मार्ग का अवलंबन करता और दो को छोड़ देता है। काण्ड एक दूसरे के पूरक होते हैं जैसे एक कुर्सी के चार पैर। कुर्सी तीन पैरों पर नहीं खड़ी हो सकती।

स्वामी दयानन्द ने ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग और उपासना मार्ग के स्थान में कर्मकाण्ड, उपासना और ज्ञान काण्ड का प्रयोग कर धार्मिक भावनाओं में एक ज्योति उत्पन्न कर दी। उन्होंने बताया कि उपासना के बिना ज्ञान और कर्म क्रे हो ही नहीं सकती। जब आपको उपास्यदेव का ज्ञान नहीं है तो आप उपासना क्या करेंगे? स्वामी दयानन्द ने वैदिक साहित्य के भिन्न-भिन्न मार्गो को एक-दूसरे का पूरक बता के

साम्प्रदायिक झगड़ों को समाप्त कर दिया। आर्य समाज के प्रचार से प्रेरणा लेकर अब तो पौराणिक लोग भी जो शैव और वैष्णव सम्प्रदायों में बंटे हुए थे निकट आ गये हैं।

हम स्वामी दयानन्द की कई प्रकार की देनों का वर्णन कर चुके हैं, परन्तु यहां एक और देन का उल्लेख करेंगे जो उन सब विशेषताओं से बढ़कर है। संसार में बहुत से धार्मिक सुधार हुए उन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के कई प्रकार के साधन बताये परन्तु उन्होंने राष्ट्रीय संगठन का विशेष उल्लेख नहीं किया। हजरत ईसा के लिए प्रसिद्ध है कि वह अपने उपदेश में कहा करते थे कि जो सीजर का प्राप्तव्य है वह सीजर को दो, और मेरा प्राप्तव्य है वह मुझे दो। इस पहेली को कुछ सुलझाने की जरूरत है। जिस देश में ईसा रहते थे वह रोम साम्राज्य का एक छोटा-सा भाग था। सीजर रोम का सम्राट था। सीजर की आकृति वहां के सिक्के पर रहती थी। ईसा का अभिप्राय यह था कि मैं शासन में कोई हस्तक्षेप करना नहीं चाहता। तुम धार्मिक विषयों में मेरा अनुसरण करो। स्वामी दयानन्द का कहना था कि जिसकी संसार में मुक्ति नहीं वह परलोक में कैसे मुक्त होगा? इसलिए स्वामी जी ने अन्य धार्मिक सुधारों के साथ-साथ भारतीय राष्ट्रीयता का एक विशेष विधान बनाया और अनेक प्रकार के विरोधी तत्वों के होते हुए भी उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सब धर्मो और सम्प्रदायों के लोग मिलकर समस्त संकुचित स्वार्थ भावनाओं को अलग रखकर भारतीय राष्ट्रीयता को सुसंगठित करें। इसके लिए दो बातों की बड़ी जरूरत थी। (1) भारत भूमि के गौरव पर विश्वास हो, और (2) भविष्य में भारत को बड़ा बनाने के लिए आशाा हो। स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों में पदे-पदे इन दोनों भावनाओं को उत्तेजना मिलती है। इस देश के गौरव के विषय में स्वामी जी लिखते हैं-

"यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश्य भूगोल में कोई दूसरा देश नहीं है। इसलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है। क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसलिए हम सृष्टि के विषय में कहते आये हैं कि आर्य नाम उत्तम पुरुषों का है और आर्यो से भिन्न मनुष्यों का नाम दस्यु है। जितने भूगोल में देश हैं, वे सब इसी देश की प्रशंसा करते हैं और आशा रखते हैं कि, पारसमणि पत्थर सुना जाता है यह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाता है।

(सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास-11)

स्वामी दयानन्द ने देखा कि कई सौ वर्ष की इस्लामी और अंग्रेजी दासता के बाद भारतीयों के दिल छोटे हो गये थें वह अकिंचन मानने लगे थे। हर एक विदेशी उनके लिए बड़ा था और हर एक विलायती चीज देशी चीजों से अधिक मूल्यवान् थी। विलायती कपड़ा देशी कपड़े से अच्छा समझा जाता था। विलायती बोली देशी बोली से अधिक उत्कृष्ट थी। इस प्रकार मरे हुए दिलों को उभारने के लिए यह ऊपर दिया हुआ प्रवचन प्रोत्साहन का काम करता है। भारतवर्ष की यह प्रशंसात्मक स्तुति करके स्वामी जी ने मुर्दा भारतीयों को संजीवनी पिला दी। इन शब्दों को पढ़कर आर्य का हृदय दिलेर हो जाता है। वह समझने लगता है कि मैं एक बड़े देश का निवासी हूँ और मुझे बड़ा होना चाहिए।

स्वामी जी ने केवल भारत के अतीत की ही प्रशंसा नहीं की अपितु भारतवर्ष की वर्तमान दुर्दशा का भी उल्लेख किया। वह लिखते हैं-" अब इनको सन्तानों का भाग्योदय होने से राज भ्रष्ट होकर विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहे हैं।" (सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास-11)

इस दुर्दशा का एक कारण भी दिया है-"इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत-सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषम शक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या, सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं, जैसे कि मद्यमांस सेवन, बाल्यावस्था में विवाह और स्वेच्छाचार आदि दोष बढ़ जाते हैं और युद्ध विज्ञान में युद्ध, विद्या, कौशल और सेना इतनी बढ़े कि जिसका सामना करने वाला भूगोल में दूसरा न हो तब उन लोगों में पक्ष-पात अभिमान बढ़कर अन्याय बढ़ जाता है।"

(सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास-11)

जिस युग में स्वामी जी जीवित थे उसे युग में

भारतवर्ष अंग्रेजों के अधीन था और प्रायः यह समझा जाता था कि मुसलमानों के अत्याचारों के पश्चात् अंग्रेजी राज्य में बहुत-सी अच्छी बातें थी। इस युग में अंग्रेज कई सौ वर्ष की वैज्ञानिक उन्नति के कारण उदार हो गये थे और भारतीय जनता इस बात को उचित समझती थी कि अंग्रेजी राज्य इतना अच्छा है। परन्तु स्वामी दयानन्द इतने मात्र से सन्तुष्ट नहीं थे। उन्होंने स्पष्ट लिखा है-

''जब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहानी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों की अखण्ड स्वतन्त्रता, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों से पदाक्रांत हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राजय भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक-पृथक, शिक्षा, अलग-अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है।'' बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।''

(सत्यप्रकाश, समुल्लास-8)

यहां स्वामी जी ने भारत पतन का निदान भी दिया है और इसका उपाय भी बताया है। यदि भारत के भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों और समुदायों के लोग प्राचीन गौरव और वर्तमान पतन की मात्रा का पूरा-पूरा अनुभव कर लें तो भिन्न-भिन्न मतमतान्तर होते हुए भी अपनी और दूसरों की रक्षा के लिए राष्ट्रीयता का पुननिर्माण कर सकते हैं।

स्वामी दयानन्द ने कहा कि समाज सुधार के लिए वैदिक धर्म त्यागने की आवश्यकता नहीं। अपितु आवश्यकता यह है कि वैदिक धर्म की बुद्धिमता से सुदृढ़ रूप में ग्रहण किया जाए। इस प्रवृत्ति से दो लाभ हुए। एक तो ईसाई और मुसलमान जो समाज सुधारक के नाम पर युवकों से अपील करते थे अपने धर्म के प्रचार में असफल रहे। क्योंकि वातावरण बदल गया। दूसरे राष्ट्र की जड़ें मजबूत हो गई

समाज सुधार में अनेक बातें सम्मिलित थी। बालकों का विवाह अच्छा समझा जाता था। बारह वर्ष की लड़की यदि ब्याही न हो तो माता-पिता को दोष लगता था। बाल-विवाह के कारण बाल-विध वाओं की संख्या लाखों-करोंड़ो तक पहुंच चुकी थी। विधवाओं का पुनर्विवाह का निषेध था। विध वाएँ सती हो जाती थी अथवा कलुषित जीवन व्यतीत करने पर तत्पर हो जाती थी। इन बुराइयों के होते हुए राष्ट्र निर्माण सम्भव ही न था। जिन्होंने आर्य समाज का आकस्मिक इतिहास पढ़ा है या जिन बुड्ढे लोगों ने उस काल को देखा है वह कह सकते हैं कि आर्य समाज को कितनी आपत्ति और विरोध का सामना करना पड़ा। मैं 19वीं शताब्दी के अन्तिम दिनों में आर्य समाज में प्रविष्ट हुआ था। आज लगभग तीन-चौथाई शताब्दी आर्य समाज में व्यतीत कर चुका हूँ। जो दशा मैंने देखी उसका अनुमान करना कठिन है। आज तो हमको चारों ओर सहानुभूति करने वाले मिलते हैं, परन्तु उन दिनों माता-पिता, सम्बन्धी और पड़ोसी भी शत्रु हो जाते थे। उन दिनों राष्ट्रीयता का प्रश्न नहीं उठता था। अधिक से अधिक कांग्रेस की ओर से ब्रिटिश पार्लियामेंट या सम्राट से कुछ अधिकारों की मांग की जाया करती थी। मांग भी नहीं, क्योंकि मांगने की तो शक्ति ही न थी। केवल गिड़गिड़ाहट मात्र, कुछ आंसू बहना-यही राष्ट्रीयता थी। कुछ प्रार्थना-पत्र इंग्लैण्ड भेज देना ही सम्भव था, वह भी सुगमता से नहीं समस्त सरकार के छोटे और बड़े अफसरों को अप्रसन्न करना पड़ता था। कराहना भी आफत को मोल लेना था। उन दिनों आर्य समाज में सत्यार्थप्रकाश पढ़ा जाता था और चुपके-चुपके आर्यसमाजियों के मन पर उसका प्रभाव भी पड़ता था। अपने आत्म सम्मान के गीत गाये थे-''कभी हम बुलन्द इकबाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो।''

जाति को कौन-कौन सी आफतें राष्ट्रीयता के निर्माण में बाधक है और इसका सुधार कैसे होना चाहिए। इसके लिए सत्यार्थप्रकाश का दसवां समुल्लास पढ़ना चाहिए। इस समुल्लास में हिन्दू जाति की वर्तमान कुरीतियों का विवरण है। हिन्दू एक दूसरे के हाथ की

रोटी नहीं खाता, खान-पान के नियम इतने बेहूदा और निरर्थक हैं कि बुद्धि काम नहीं करती।

किसी के हाथ की रोटी नहीं खा सकते, पर पूड़ी खा सकते हैं, किसी के हाथ की मिठाई खा सकते हैं, पूड़ी नहीं। किसी के हाथ का आलू का साग खा सकते हैं, उड़द की दाल नहीं खा सकते। किसी के बर्तन को नहीं छू सकते हैं परन्तु उस बर्तन का दूध ले सकते हैं। यह प्रथाएं इतनी कड़ी थी कि थोड़ी-सी त्रुटि करने पर लोग बिरादरी से निकाल दिये जाते थे। हिन्दू समुद्र की यात्रा करने से धर्म खो बैठता था। यही सब हमारी राष्ट्रीयता को दूषित कर रही थी।

आर्य समाज ने सबसे पहले इन कुरीतियों को नष्ट किया। आर्य समाज के पूर्व आठ कनौजिया और नौ चूल्हों की कहावत प्रसिद्ध थी अर्थात् यदि आठ कनौजिया बुद्धिमान् हों तो वे एक-दूसरे का पकाया भोजन नहीं कर सकते थे। इस नियम का पालन इतना कठोर था कि एक आदमी दूसरे आदमी के चूल्हे से आग भी नहीं ले सकता था। एक अलग चूल्हा जलाना होता था जिससे हर एक अपने लिए आग ले सके।

इसमें सन्देह नहीं कि महात्मा गांधी ने सुधार की प्रगति को बहुत तेज कर दिया और कई विषयों में अपूर्व साहस से काम लिया परन्तु अछूतों में कार्य का आरम्भ तो आर्य समाज ने ही किया था। डॉक्टर अम्बेडकर की आरम्भिक शिक्षा तो आर्य समाज से ही शुरु हुई थी। पंजाब के ओडों, रहतियों आदि के उत्थान का काम महात्मा मुंशीराम, लाला लाजपतराय, पं. रामभज दत्त आदि ही ने किया था। कांग्रेस की कोई आवाज न थी।

जो लोग यह समझते हैं कि भारत प्राचीनकाल में कुछ न था और जो कुछ उन्नति दिखाई देती है वह दूसरे देशों के विजेताओं की देन है वे भारत के बाहर से प्रेरणा लेते रहेंगे और भारत कभी स्वतन्त्र न हो सकेगा। स्वामी जी की शिक्षा ने उनके शिष्यों के हृदय में राष्ट्रीयता की नई लहर उत्पन्न कर दी है। दयानन्द का प्रत्येक अनुयायी दिन में दो बार संध्या करते हुए ईश्वर से प्रार्थना किया करता है-

**अंदीनाःस्याम शरदः शतम्'**

हे ईश्वर मैं अपनी सौ वर्ष की आयु में किसी का दीन (गुलाम) न रहूं।


**धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री**

**ऋतु अनुकूल**

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

| | | |
|---|---|---|
| विशिष्ट | 23.00 | रु. प्रति किलो |
| उत्तम | 28.00 | रु. प्रति किलो |
| विशेष | 45.00 | रु. प्रति किलो |
| डीलक्स | 65.00 | रु. प्रति किलो |
| सुपर डीलक्स | 120.00 | रु. प्रति किलो |

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

**मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर**

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

# सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

**गतांक से आगे**

–राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

हरण की जाती हुई सीता अपना कोई रक्षक ना देखती हुई आकाश मार्ग से जब जा रही थी तो पर्वत के शिखर पर पाँच श्रेष्ठ वानरों को देखा और उस विशाल नेत्रों वाली ने अपने कुछ आभूषण ऊपर से डाल दिये और सीता के इस कम्र को रावण भी नहीं जान सका। उन वानरों ने भी प्रत्यक्ष उस विशाल नेत्रों वाली सीता को रूदन करते हुए देखा और उन्होंने यह भी जान लिया कि इस कर्म को राक्षस पति रावण कर रहा है। सीता को लंका में ले जाकर उस श्याम नेत्रों वाली शोक से युक्त को छिपाकर रखा। रावण ने भयंकर दिखने वाली स्त्रियों को आदेश दिया कि इसको हमारी अनुमति के बिना कोई भी नहीं देखने पावे। इस प्रकार आज्ञा देकर रावण अंत:पुर से निकलकर सोच विचार करने लगा कि अब मुझे क्या करना चाहिए। इसी के लिए उसने बहुत बलशाली 8 राक्षसों को बुलवाया। उनके बल पराक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि ''आप जन स्थान में जाकर वास करते हुए मुझे उन दोनों भाईयों की खबर देते रहना।'' 8 महाबली राक्षसों को आज्ञा देकर रावण जिसकी बुद्धि विपरीत हो गई थी, अपने आप को कृतकृत्य समझने लगा और काम रूपी बाणों से पीड़ित हुआ सीता का चिन्तन करता हुआ फिर सीता के पास जा पहुंचा और उसको लुभाने की इच्छा से बोला ''हे विशाल नेत्रों वाली सीता मेरा यह सम्पूर्ण राज्य तथा मेरा जीवन और मेरी अन्य सब स्त्रियों की तू स्वामिनी होगी। सो हे प्रिये! तू मेरी भार्या बन। हे मैथिली कुबेर का पुष्पक नामा विमान जो सूर्य के समान है। उस पर मेरे साथ नाना प्रकार के विहार करती हुई सुखपूर्वक विचर। तेरा इस प्रकार रोना शोभा नहीं पाता।'' रावण के इस प्रकार कथन करने पर सीता निर्भय हो और मध्य में एक तिनका रख रावण से बोली ''जगत विख्यात राजा दशरथ अचल धर्म का सेतु और सत्य प्रतिज्ञ हुए उनका पुत्र राघव जो तीनों लोकों में विख्यात, महाबाहु तथा विशाल नेत्रों वाला मेरा पति है। हे रावण! सिंह के समान कन्धों वाला मेरा भर्ता अपने भाई लक्ष्मण के साथ आकर तेरे प्राणों का हनन करेगा। तू अपने आपको मरा हुआ समझ। तेरा यह पाप कर्म तुझे ले डूबेगा। हे राक्षस! इस अचेतन शरीर को चाहे बांध, चाहे मार मुझे अपने जीवन की रक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं तेरी तरह पृथ्वी पर अपनी निन्दा कराऊँगी।'' यह वचन कहकर सीता चुप हो गई। रोंगटे खड़े करने वाले सीता के कठोर वचन सुनकर क्रोध में भरकर रावण बोला ''हे मैथिली! तू मेरी बात सुन। यदि 12 मास तक तू मुझे स्वीकार नहीं करेगी तो मेरे रसोईये तेरे टुकड़े-टुकड़े करके खा जायेंगे।'8 और फिर पृथ्वी पर पैर पटकता हुआ उन भयंकर दर्शनों वाली राक्षसियों से बोला कि ''इसको अशोक वाटिका में ले जाओ और इसको भय व प्यार से मेरे लिए राजी करो।'' आज्ञा पाने पर वे राक्षसियाँ सीता को अशोक वाटिका में लेकर चली गई और सीता अपने प्यारे पति और देवर का स्मरण करते हुए अत्यन्त व्याकुल हो गई।

टिप्पणी:- जब सीता जी को रावण विमान द्वारा ले जा रहा था तो सीता जी की नजर एक पर्वत पर बैठे पाँच वानरों पर गई। यहां पर वाल्मिकी रामायण में वानरपुंगवान अर्थात् श्रेष्ठ वानर लिखा हुआ है। हमने अपनी नासमझी से इन्हें बन्दर मान लिया। जबकि हमने पिछले लेख में उस समय की प्रचलित जातियों के विषय में लिखा था। इसी प्रकार वानर अर्थात वन में रहने वाला। ये वन्य जातियां थी जो वनों और पहाड़ों पर रहना पसन्द करती थी। इनका राज्य किषकन्धा (वर्तमान कर्नाटक) के आसपास था। ना वानर बन्दर थे, ना राक्षस सींगों वाले थे। ये सभी मनुष्य थे। इनकी संस्कृति और भौतिक स्मृद्धि में अन्तर था। आर्य संस्कृति जिसका केन्द्र अयोध्या था सबसे उत्तम और वेदानुकूल समझी जाती थी। वेदों का पठन पाठन तो किषकन्धा और लंका में भी होता था लेकिन वहां पर मनुष्यों में आचार-विचार का बहुत बड़ा भेद पाया जाता है। बाली जो किषकन्धा का राजा था और रावण जो लंका का

राजा था इन दोनों जगह मन्त्री परिषद् और राजतन्त्र होते हुए भी ये दोनों स्वेच्छाचारिता की ओर अग्रसर थे। यम नियमों और स्वाध्याय में प्रमाद करने से बहुत से दोषों का आना स्वाभाविक है जो इनमें भी आ गये थे। खायो पीयो, मौज उडाओं की भोगवादी विचारधारा इनके अन्दर प्रवेश कर गई थी। सबसे उत्तम संस्कृति उस समय आर्य संस्कृति थी जो यज्ञ परायण संस्कृति थी। वानर संस्कृति इससे कुछ कम यज्ञ परायण थी परन्तु राक्षस संस्कृति तो पूरी तरह हिंसा परायण हो चुकी थी। प्रकरण अनुसार पाँच वानरों को श्रेष्ठ वानर कहा गया है। अगर वे बन्दर ही थे तो बन्दरओं का क्या श्रेष्ठ होना और क्या श्रेष्ठ ना होना। सत्य तो यह है कि वे सभी मनुष्य थे। इस सम्बन्ध में विस्तार से वर्णन उस समय करेंगें जब महाबली हनुमान का विषय आएगा, क्योंकि इन पांचों में एक हनुमान भी उपस्थित थे। यहां पर सीता जी के उत्तम चरित्र का भी वर्णन पाया जाता है। कोई भी प्रलोभन सीता के मन को विचलित नहीं कर पाया। यहां बाबा तुलसीदास जी भी ऐसा ही कह रहे हैं देखिए:-

**''हारि परा खल बहु विधि भय अरू प्रीति देखाई।**
**तब असोक पादप तरु राखिसि जतन कराई।''**

अर्थात् बहुत यतन करने के पश्चात् भी सीता ने रावण की बात को स्वीकार नहीं किया तो उसको अशोक वाटिका में राक्षसियों के सुपुर्द कर आज्ञा दी कि इसे किसी भी प्रकार से समझाओं ताकि यह मेरे से प्रेम करने लगे। जहां तक रावण से बातचीत करने के समय सीताजी मध्य में एक तिनका रख लेती है इसका तो हम यही तात्पर्य निकालते हैं कि दुराचारी पुरुष से सीधे-सीधे बात करना भी एक पाप कर्म है। यह एक बहुत गहन और मनोवैज्ञानिक विषय है जिसका यहां विस्तार से वर्णन करना संभव नहीं है। हमें कई बार बड़ा आश्चर्य होता है कि कई आर्य लेखक भी बिना सोचे समझे रामायण आदि ग्रन्थों पर कुछ का कुछ लिख देते हैं। एक आर्या बहन ने अपनी पुस्तक में इसी प्रसंग में लिखा है कि सीता तो रावण की राजनैतिक बंदी थी। राजनैतिक बंदी की परिभाषा और अपहरण की परिभाषा में दिन-रात का अन्तर है। इसे पाठकगण समझते ही हैं।


## प्रवेश प्रारम्भ

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर, गुड़गांव में कक्षा 4 से 10वीं तक गुरुकुल प्रारंम्भ किया जा रहा है। जिसमें आधुनिक विषयों के साथ गुरुकुलीय शिक्षा एवं संस्कार भी दिए जाएंगे। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी सम्पर्क करें- आचार्य राजहंस मैत्रेय, 9813754084

## आवश्यकता

आवश्यकता है **एक सेवानिवृत मुख्य अध्यापक** जो गुरुकुल में छात्रों की सेवा करना चाहते हैं। भोजन, आवास, गुरुकुल में ही रहेगा। **एक अनुभव कुशल वार्डनर** (संरक्षक) छात्रों के लिए आवश्यकता हैं जो जो छात्रों को सुबह 4:30 बजे से रात्रि 9:00 बजे तक पूरी दिनचर्या चला सके। उचित वेतन, भोजन, आवास की व्यवस्था है। **एक निपुण रसोईया** की शीघ्र आवश्यकता है जिसको आवास, भोजन और उचित वेतन दिया जायेगा। सम्पर्क करें- आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084, विक्रम देव शास्त्री, मो. 9896578062


## जिसकी हत्या में उम्रकैद काट रहा हूं वो जिंदा है।

जिसकी हत्या के जुर्म में वह पत्नी सहित ग्यारह साल से जेल काट रहा है वह तो जिंदा है। ना मानो तो उन लोगों से पूछ लो जिन्होंने 9 साल पहले उसे देखा था। यही दलील दी है हत्या के जुर्म में पत्नी सहित तिहाड़ जेल में उम्रकैद की सजा भुगत रहे बीरबल ने सुप्रीम कोर्ट में। सुप्रीम कोर्ट ने बीरबल की याचिका पर संज्ञान लेते हुए उसके केस से संबंधित सारे रिकार्ड तलब किए है। ये शायद अपनी तरह का बिरला मामला होगा जिसमें सुप्रीम कोर्ट तक से उम्रकैद की सजा पर मुहर लगने के बाद दोषी ने याचिका दाखिल कर पूरे सिस्टम पर सवाल उठाया। उसने कोर्ट से जमानत भी मांगी है। जस्टिस एके पटनायक और एके सीकरी की पीठ ने बीरबल की वकील के शारदा देवी की दलीलें सुनने के बाद बीरबल के मामले का सारा रिकार्ड ट्रायल कोर्ट से मांगा है। गौरतलब है बीरबल और उसकी पत्नी को मोतीलाल की हत्या के जुर्म में 2001 में दिल्ली की सत्र अदालत ने उम्रकैद की सजा सुनाई थी। दिल्ली हाई कोर्ट ने 2009 में उसकी अपील खारिज कर दी और 2010 में सुप्रीम कोर्ट ने भी दोनों की उम्रकैद पर मुहर लगा दी। लेकिन बीरबल ने गत वर्ष सुप्रीम कोर्ट में नई रिट दाखिल कर दावा किया कि जिस व्यक्ति की हत्या के जुर्म में वह और उसकी पत्नी उम्रकैद की सजा भुगत रहे है वह जिंदा है।

साभार दैनिक जागरण 23 मई 2013

# सतत अभ्यास से ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है: दुग्धाहारी

स्थानीय आत्मशुद्धि आश्रम में श्रद्धालुओं को प्रवचन देते हुए स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी ने कहा कि लगातार अभ्यास द्वारा शरीर एवं मन को इच्छानुवर्ती अर्थात् इच्छा अनुसार कार्य करने लायक बनाया जा सकता है। परोक्ष रूप से अभ्यास की यह प्रक्रिया ही व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

स्वामी जी ने कहा कि प्रतिभा योग्यता के विकास में बुद्धि आवश्यक तो है सर्व समर्थ नहीं। बुद्धिमान होते हुए भी विद्यार्थी यदि पाठ याद न करे, पहलवान व्यायाम छोड़, संगीतज्ञ, क्रिकेटर अभ्यास करना छोड़ दें, चित्रकार तूलिका का प्रयोग न करे, कवि भाव संवेदनाओं को संजोना छोड़ बैठे, तो उसे प्राप्त क्षमता भी क्षीण होती जाएगी।

बुद्धि की दृष्टि से कर्म पर सतत अभ्यास में मनोयोग पूर्वक लगे, व्यक्ति अपने अंदर असामान्य क्षमताएं विकसित कर लेते हैं। निश्चित समय व निर्धारित क्रम में किया गया प्रयास मनुष्य को किसी भी प्रतिभा का स्वामी बना सकता है। अभ्यास के अभाव में प्रतिभाएं कुंठित हो जाती हैं, उनमें व्यक्ति अथवा समाज को कोई लाभ नहीं मिल पाता। मानव शरीर अनगढ़ है और वृत्तियां असंयमित। इन्हें सुगढ़ एवं ससंयमित करना ही अभ्यास का लक्ष्य है। अनगढ़ काया एवं मन अनभ्यस्त होने के कारण सामान्यता किसी भी नए कार्य को करने के लिए तैयार नहीं होते। उल्टे अवरोध खड़ा करते हैं उन्हें व्यवस्थित करने के लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता पड़ती है। अभ्यास से ही आदतें बनती हैं और अंततः संस्कार का रूप लेती हैं। कितने ही व्यक्ति किसी भी कार्य को करने में अपने को असमर्थ मानते हैं, उन्हें असंभव जानकर प्रयास नहीं करते हैं। फलस्वरूप कुछ विशेष कार्य नहीं कर पाते।

किसी भी कार्य को करने का संकल्प कर लेने एवं आत्म विश्वास जुटा लेने वाले व्यक्ति उसमें अवश्य सफल होते हैं। आत्म विश्वास की कमी एवं प्रयास का अभाव ही मनुष्य को आगे बढ़ने से रोकता तथा महत्वपूर्ण सफलताओं को पाने से वंचित रहता है। मानवीय काया परमात्मा का विलक्षण संरचना है। उसे जैसा चाहें ढलाया, बनाया जा सकता है। - दैनिक जागरण से साभार

# देशद्रोही कौन?

**- देवराज मित्र आर्य**

देशद्रोही वह है-

1. जो आवश्यकता से अधिक संग्रह करके गरीब जनता को भूखा मरने पर विवश करता है।
2. नियमों/कानूनों का उल्लंघन करके अनुशासन भंग करता है, जैसे-जहां धूम्रपान निषेध है, वहां बीड़ी-सिगरेट पीता है, वायुमंडल दूषित करता हैं।
3. जो ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता, रिश्वतखोर है, बिना परिश्रम के मुफ्त ही खाता है।
4. अपने अनुचित मांग पूरी कराने के लिए राष्ट्र की सम्पत्ति और जान-माल को हानि पहुंचाता है।
5. जो चोरी करता है, डाके डालता है, अपहरण और बलात्कार जैसे कुकर्म करके समाज व देश को कलंक लगाता है।
6. गलत झूठी अफवाह फैलाकर जनता को गुमराह करता है। अंधविश्वास, कुरीतियां उत्पन्न करता है।
7. अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा को छोड़कर अपने देश में विदेशी भाषा को प्राथमिकता देता है, जैसे-अंग्रेजी में निमंत्रण पत्र छपवाता है।
8. जो दूध-घी, मसाले आदि में मिलावट करके बेचता है। झूठ बोलकर, कम तोल कर ठगता है।

ऐसे देशद्रोही क्षमा के योग्य नहीं, इन्हें अपराध की सजा देनी चाहिए।

WZ-428, हरि नगर, नई दिल्ली

# मानसिक रोगों का मनोवैज्ञानिक उपचार

- डा. अनीता, हरिद्वार

अनियमित भोगेच्छा मानसिक रोगों का मूलहेतु बन जाती है। होता यूँ है कि शारीरिक सुख की इच्छा इन्द्रिय-भोग के कारण उत्पन्न होती है और जब समाज के भय से अथवा नैतिक मूल्यों के कारण इस इच्छा आकांक्षा की पूर्ति नहीं होती तो भावनाएं भीतरी मन में चली जाती है। दमित होने के कारण ये अतृप्त विचार स्वप्नों में और मानसिक रोगों में प्रतीक रूप से प्रकाशित होते हैं। गीता में युक्त आहार-विहार के द्वारा दु:खों से छूटने का उपाय भगवान् श्रीकृष्ण की अमोघ वाणी में निर्दिष्ट है। हम जैसा संग करते है, जैसा सोचते-विचारते हैं, वैसे ही बन जाते हैं। अत: सद्ग्रन्थ हमें सत्पथ पर चलने का आदेश देते है, क्योंकि सत्त्व पर चलने का आदेश देते हैं, क्योंकि सत्त्व गुण का आरोग्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है। रज, तम और गुण हमें रोग चिन्ता तथा प्रमाद की ओर ले जाते हैं, जिससे जीवन शारीरिक रोग, जैसे रक्तचाप, लीवर, मधुमेह, कैंसर जैसी बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है और वह दु:खमय प्रतीत होने लगता है।

सत्त्वगुणी कौन के विषय में कहा गया है कि आस्तिक, भोजन बाँटकर (संतुलित) खानेवाला, शान्तचित, सत्य वचन बोलनेवाला, मेधा, बुद्धि, धृति, क्षमा तथा करूणा से युक्त, अहंकारशून्य, इच्छारहित, अनिन्दिम कर्म करने वाला विनयशील पुरुष तथा सदैव धर्म का आदर करने वाला ही सत्त्वगुण सम्पन्न जाना जाता है। इन्हीं गुणों के कारण ज्ञानियों में ऐसे सत्पुरुषों की महिमा का वर्णन किया जाता है। शास्त्रों में सत्त्व की उपासना दो प्रकार की बतायी गयी है।

रज, तम की अवस्था में चित्त चंचल रहता है। काम आदि विकृतियाँ आ जाती है। मनुष्य अनीति-पथ का अनुगामी बन जाता है। सत्वगुणी नीतिमान् एवं धार्मिक होता है। सत्य, अहिंसा आदि सद्गुणों के पालन में तत्पर रहता है, इसलिए वह समाज का प्रकाश स्तम्भ बन जाता है।

पाक्षचात् मनोवैज्ञानिक मानते है कि हमारे मन समुद्र में उतराते हुए बर्फ (आइस बर्ग) के सदृश है, जिसका एक अंश पानी के ऊपर दिखायी पड़ता है और शेष आठ भाग पानी में अदृश्य रहता है। दिखने वाला भाग चेतन मन है। अदृश्य भाग को अचेतन मन कहा गया है। सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य के लिए मन में सुन्दर एंव दृढ़ कल्पना करना आवश्यक है। जो हम बनना चाहें उसकी स्पष्ट कल्पना मन में होनी चाहिए। दृढ़ कल्पना हृदय में आत्मविश्वास पैदा कर देती है और हम अपने कार्य में सफल होते हैं। कल्पना के समय मन सुप्त रहना चाहिये अन्यथा तर्क एवं मन हमारे भाव को बदल सकते हैं। जैसे शान्त झील में चन्द्रबिम्ब स्पष्ट दिखायी पड़ता है, उसी प्रकार शान्त मन में कल्पना फलित होती है।

हमारा चेतन मन जब सो जाता है जब भी हमारा अचेतन मन जागता रहता है। 'छन्दोयोपनिषद्' के अनुसार सुषुप्ति अर्थात् प्रगाढ़ निद्रा में हम ईश्वर से जुड़ जाते हैं। जागने पर कभी-कभी कहते हैं कि आज अच्छी नींद आयी। मन में आत्मा का अनुप्रवेश है। जैसे शीशा एवं जल में मनुष्य का प्रतिबिम्ब प्रवेश करता है, वैसे ही मन में परमात्मा का प्रतिबिम्ब प्रवेश करता है। समाधि तथा शान्त मन की स्थिति में सोने पर जीवात्मा परमात्मा से जुड़ जाता है। जागने पर हमें नयी स्फूर्ति की प्रतीति होती है। रोगी मनुष्य को गाढ़ी निद्रा नहीं आती है। अत: उसे कुछ व्यायाम करना आवश्यक है। व्यायाम एवं सुपाथ्य मनुष्य को नीरोग बनाता है।

फ्रांस के डॉ. इमिलकुए अपने चिकित्सालय में रोगी को शान्त भाव में लाकर सुलाते थे। सोने के पहले वे रोगी से मन्त्र-रूप में कई बार कहलवाते थे कि 'मैं प्रतिदिन स्वस्थ से स्वस्थतर होता जा रहा हूँ।' यह आत्मनिर्देश सोते समय सीधा अचेतन मन में प्रवेश कर जाता था और जागने पर रोगी को आराम मालूम होता था। इस अभ्यास को बराबर करने का आदेश रोगी को देते थे। वे कहते थे कि हमारे अचेतन मन में अपार शक्ति है, इससे जुड़ने पर चमत्कारिक कार्य करने की क्षमता व्यक्ति में आ जाती है। मनुष्य का मन वासना के कारण मलिन हो जाता है।

मन मलिन होने पर ईर्ष्या, द्वेष, भय, शोक आदि आवेगों का अनुभव होने पर पाचन, प्राणन, हृदयगति

आदि जीवनोपयोगी क्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है और तन से, मन से रोगी बन जाते हैं। जबकि शान्त मन होने पर हमारा मोह नष्ट हो जाता है। कर्ताभाव समाप्त हो जाता है। हम तब तक ब्रह्मानन्द के अमृत-स्रोत से जुड़ जाते हैं। हम धर्म-मार्ग के अनुकरण करने से जप, तप आदि के द्वारा ब्रह्म-साक्षात्कारक के योग्य बन जाते हैं। प्रसिद्ध मनः चिकित्सक एवं भारतीय दर्शन के प्रेमी डॉ. चार्ल्स युग का कथन है कि जिसने पूजा-उपासना से चेतन मन को शान्त करने तथा अचेतनरूप से ईश्वरीय तत्त्व से सम्पर्क बनाना जान लिया, उसने स्वस्थ रहने की जीवन कला सीख ली। वह समाज का उपयोगी व्यक्ति होगा।

आज के वैज्ञानिको ने तरंगो के प्रभाव के अध्ययन से यह सिद्ध कर दिया कि जीवन प्रतिध्वनि है। वीतराग संत-महात्माओं के साथ सम्बन्ध से हमें आध्यात्मिक पथ पर बढ़ने की लालसा होती है। अतृप्त आत्माओं से निर्बल मन शीघ्र जुड़ जाता है, जिससे रोग, तृष्णा की वृद्धि होती है। अतः सत्संग एक जीवन चिकित्सा प्रणाली है। हमें सावधान रहना चाहिए कि किसका संग हमें अभ्युदय की ओर ले जाता है। और किसका संग बलहीन की ओर ले जाता है। बलहीन को दिव्य आत्मा का ज्ञान नहीं होता है। वह सत् आत्मा को परमात्मा से जोड़ने की कला नहीं जानता है। चिन्ता लेकर सोता है, चिन्ता लेकर जागता है। जबकि नींद में हम परमात्मा से जुड़ते हैं, फिर नयी स्फूर्ति लेकर जागते हैं और दैनिक कृत्य शास्त्रानुकूल करने की शुभ प्रेरणा प्राप्त करते है। हम जो कुछ कहते-करते हैं, वैसा ही वातावरण चारों ओर से हमारी ओर लौटना शुरु हो जाता है, क्योंकि जीवन एक प्रतिध्वनि हैं जो हम दान देते हैं, वह कई गुना बढ़कर हमारे पास लौट आता है। पृथ्वी में एक बीज बोते है तो प्रकृति सैकड़ों में हमें लौटाती है। प्रकृति-भूमि हमारी माता है। जबकि पाश्चात् संस्कृति प्रकृति से संघर्ष कर उस पर विजय की सोचती है। संघर्ष मन में भेद पैदा करता है। अतः वे शान्ति, अध्यात्म से दूर रहते हैं। भारतवासी प्रकृति से ऐकात्मक सम्बन्ध जोड़ते हैं। विराट् भूमि-सुख की ओर बढ़ते हैं। सांसारिक सुख अल्प है, जिससे भारतीय दूर रहते हैं। इन्द्रिय सुख हमें राग, द्वेष इच्छा आकांक्षाओं से दुर्बल बनाता है। हम संकीर्ण हो जाते हैं। रोगग्रस्त हो जाते हैं। जड़-चेतनयुक्त एवं गुण-दोषमय इस संसार से हंस के समान गुण ग्रहण करना और दोष त्याग देना चाहिए। जो व्यवहार हमें प्रिय लगता हो, वही दूसरों के प्रति करना कर्त्तव्य है। यही शास्त्रों का उपदेश है। अविद्या से रोग, शोक, मृत्यु और भय पर विजय प्राप्त करना है और विद्या से अमृत की प्राप्ति करनी है।

महापुरुषों की क्रिया-सिद्धि उनके तेज (उत्साह) पर ही निर्भर करती है, साधनों पर नहीं। निश्चय की परिपक्कता अन्तर्मुखी चिन्तन से आती है। बहिर्मुखी चिन्तन से राग-द्वेष पैदा होता है। इच्छाओं, आवश्यकताओं की पूर्ति न होने से दुर्गुण बढ़ते हैं, जिंसका प्रभावमन स्वास्थ पर पड़ता हैं। हमारी शक्ति बिखर जाती है और हम उत्साहहीन होकर रोगी बन जाते हैं। पाश्चात मानसिक चिकित्सक डॉ. विलियम ब्राउन ने मानसिक चिकित्सा के चार अङ्ग बताये हैं- (1) दमित भाव का रेचन, (2) सम्मोहन और निर्देशन, (3) आत्मज्ञान अर्थात् अपनी पुरानी घटनाओं को साक्षी भाव से देखने का अभ्यास कराना और (4) भावों को स्थानान्तरण। डॉ. चार्ल्स युग जो भारतीय योगाशास्त्र एवं उपनिषदों के प्रेमी थे, उन्होंने एक पाँचवीं विधि को और जोड़ा है-रोगी के जीवन-मूल्यों का नवनिर्माण। आज के मनोवैज्ञानिक किसी एक विधि से उपचार एकाङ्गी मानते हैं। अतः वे सब विधियों से सरल प्रक्रिया के समन्वयात्मक अंग से ग्रहण करने को चिकित्सा की उत्तम विधि मानते हैं। भारतीय मनोवैज्ञानिक चिकित्सक, योगशास्त्र एवं भगवान् बुद्ध के आनापान सतियोग का सहारा लेते हैं। योगसूत्र में मैत्री भावना एवं संतोष-भावना


## साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

–व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

का मानसिक रोग को दूर करने में विशेष महत्व है। सब समय सबके प्रति मैत्री भावना एवं संतोष-भावना का मानसिक रोग को दूर करने में विशेष महत्व है। सब समय सबके प्रति मैत्री भावना एवं जीवन में मैत्री भावना तथा संतोष के ग्रहण से उत्तम सुख, स्वास्थ्य और लाभ की प्राप्ति होती है। आनापान सति की क्रिया भी उपयोगी है। आनापान सतियोग में रोगी को शान्तभाव में लाकर सुला देता है। फिर श्वास पर सहज ध्यान दिलाकर रोगी को सुला दिया जाता है। जागने पर रोगी को आराम मिलता है और यह क्रिया चिकित्सक के अनुसार नित्य स्वस्थ होने पर जारी रखनी पड़ती है। ये क्रियाएँ हमारे विभाजित व्यक्तित्व में एकता स्थापित कराकर बिखरी हुई मानसिक शक्तियों को एकीकरण की ओर ले जाती है। इस विधि में भी दमित मानसिक भाव को चेतना के सतह पर आने की छूट दी जाती है। बार-बार दमित भाव के स्मरण से रोग का बल कम हो जाता है और संतोष पैदा करने का स्वभाव भी क्षीण हो जाता है।

मानसिक चिकित्सा में सबके प्रति मैत्री भाव का सदुपदेश वेदों में भी प्रतिपादित है। 'अथर्ववेद' के एक मन्त्र में मैत्री की व्यापकता को बताते हुए कहा गया है- 'सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु'-अर्थात् सारी दिशाएं मेरी मित्र हों। इसी प्रकार-'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:'- की शक्तिसम्पन्न अमृत-भावना का हम प्रतिदिन स्मरण करते है। मन का एक नियम है कि वह एक समय में एक बात का स्मरण करे। चाहे रोग के बारे में चिन्ता करे या स्वास्थ्य के मङ्गल-सूत्रों का स्मरण करे। अत: हमारा कर्त्तव्य है कि हम सदा शुभ संकल्प करें, मैत्री एवं संतोष की भावनाओं का स्मरण करें।

भारतीय संस्कृति सदा से त्याग-तपस्यामय रही है। एवं तपोवन में फूली-फली है। यह हमें बताती है कि स्वार्थपूर्ण इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की वृद्धि से विकृति आती है। अत: त्याग एवं वैराग्य का संकल्प लेकर निष्काम होने की साधना करनी चाहिए ताकि रोगों को पनपने के मौके ही न मिले। त्यागसहित भोग करें।

मानसिक रोगों में मेधा क्वाथ, मेधा वटी, सारस्वतारिष्ठट का प्रयोग कुशल वैद्य के परामर्श से करें।

**( पृष्ठ 7 का शेष )**

वाला ज्ञान तो व्यक्ति को आत्म अज्ञान में ही रखता है। तथा वह साधक को ज्ञानी होने का भ्रम भी पैदा किए होता है, और वह सच में कुछ भी नहीं जानता। क्योकि सतत जानने की प्रक्रिया ही अनुभूति है। अनुभूति में परमात्मा का ज्ञान निरन्तर रहता है और अटूट रूप से उसकी धारा में तैरता जाता है। और जब उसमें तैरता जाता है, तो वह सभी कर्म व चेष्टाओं में सर्वत्र अनुभव होता है फिर साधक उसमें सदैव उसमें ही रहता है और सभी तरह के झंझटों से मुक्त हो जाता है जीते जी वह सभी तरह के झंझट व द्वन्द्वो से पार हुआ परम शान्ति का अनुभव करता है। वही मोक्ष या मुक्ति में है। इसके अतिरिक्त सब प्रपंच है। और मन को बहलाने के रांस्ते हैं। अनुभूति में ही साधक वीतराग परम शान्त हुआ संसार में रहते हुए भी संसार के पार होता है। यह साधक योगी की अन्तिम मंजिल है। प्राय: साधक अतीत की स्मृतियों और भविष्य की सुखद कल्पनाओं में खोए रहते हैं। और उसे ही ज्ञान मानते हैं। वे कभी स्वयं में जीवंतता का अनुभव नहीं कर पाते। आत्मा परमात्मा में संलग्न रहते हुए सारा जीवन ही यो ही निकल जाता है। जिन्हें परमात्मा का एक बार भी अनुभव नही हो पाता। क्योंकि वह शास्त्रीय ज्ञान या अन्य वक्ताओं द्वारा सुने हुए ज्ञान को ही यथार्थ ज्ञान मान कर इति श्री कर लेते हैं। जो केवल भ्रान्ति स्वरूप ही है फलत: साधक को अनुभूति की और बढना चाहिए।

**- राजहंस मैत्रेय**


## साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

**अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।**

**कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084**

# सुखों का मूल

- आर.पी. आनन्द

कहते हैं जिन्दगी कितनी खूबसूरत है तभी तो मनुष्य सदा से सुख पाने की इच्दा रखता है और वह यह सुख संसारिक वस्तुओं में पाने की चेष्टा करता है। यदि संसार के पदार्थों में सुख न होता तो प्राणी धन को क्यों एकत्र करता। भोजन में सुख न होता तो भोजनी क्यों करता। वस्त्र नए 2 पहन कर बहुत प्रसन्न और आनन्दित होता है। चार मंजिले मकान को देखकर खुश होता है और कहता है यह मेरा है। इसी सुख प्राप्ति के कारण ही वस्त्र सिलवाता है और मकान बनवाता है। कहने का भाव यह है कि संसार के प्रत्येक पदार्थ में सुख है तभी तो प्राणी उन्हें चाहता है और संसारिक वस्तुओं को छोड़ना भी नहीं चाहता। उनके पाने में सुख और वियोग में दु:ख मानता है।

देखा जाये तो संसार के पदार्थों में सभी सुख नहीं है, केवल सुख जैसा प्रतीत होता है। परन्तु सुख तो प्रत्येक मनुष्य के अपने ही अन्दर है। जिस खोजिया, तिन पाईया। जब मनुष्य संसारिक वस्तुओं का प्रयोग कर सुख मानता है तो उसे छोड़ने का मन नहीं करता। छूट जाने पर उसे दु:ख प्रतीत होता है। लोग अपने सुख के लिए धन एकत्र करते है। यदि धन में सुख होता तो धनी लोग कभी दु:खी न होते। धनी लोगों को चिन्तायें और भय सताता रहता है कि कहीं उनका धन चोर व डाकू न चुरा कर ले जाये। धनी प्राणी बीमारी में कष्ट पा रहा है, वह धन से दवाई खरीद कर खा सकता है मगर स्वास्थ्य नहीं खरीद सकता, नींद नहीं खरीद सकता।

**'धन का बिस्तर मिल जायें, पर नींद को तरसे नैन, काटों पर भी सोकर आए, किसी के मन को चैन, अरे कोई कारण होगा।**

धन से भोजन खरीद सकता है पर भूख नहीं, धनी के पास करोड़ो की सम्पत्ति है मगर एक पाव दूध व चावल नहीं पचा सकता। तो बताओं धन में सुख कहाँ। अग्नि का धर्म जलाना और चीनी का धर्म मीठापन। यदि संसारिक पदार्थों में सुख होता तो प्राणी सुख की खोज क्यों करता।

सुख का भंडार तो केवल सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान परमात्मा में ही है अन्य कहीं नहीं। मीठा खाने से उसके गुणों का अनुभाव होता है आनन्द का नहीं। ..... श्री खाई तो मीठी, हरी मिर्च खाई तो तीखी प्रतीत हुई। शराब और अफीम खाने में भी लोग आनन्द मानते है। परन्तु सभी आनन्द तो उन लोगों को मिलता है। जिनका चित्त एकाग्र अवस्था में हो जितनी देर चित्त में एकाग्रता रहती है उतनी देर तक आनन्द भी रहता है। किसी भी चीज़ का जब मनुष्य अभ्यासी हो जाता है तो उसमें उस प्राणी की एकाग्रता होने लगती है। उसके मन पर संस्कार पड़ जाते हैं। चित्त की एकाग्रता में ही परमात्मा के सुख का अनुभव होता है। परन्तु अज्ञानी मनुष्य समझता है कि सुख बाहर के पदार्थों में ही मिल रहा है। संसार के पदार्थों के प्रयोग से थोड़ी देर के लिए एकाग्रता होने पर आनन्द मिलता है। इसके विपरीत यदि भगवान की भक्ति में मन एकाग्र करने का अभ्यास किया जाये तो शान्ति मिलती है और अन्त में परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है जो मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य है। अपने आपको उसकी शरण में अर्पित कर दीजिए।

–सी 7/10, मियां वाली नगर, देहली–110087

## आनन्दपूर्ण जीवन हेतु

दु:ख, अशान्ति, तनाव, वैमनस्य आदि भावों को रूपान्तरित कर सुख शांति, प्रेम करूणा एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण, मानसिक दुर्भावनाओं से निर्जरा स्वयं के व्यक्तित्व का सम्यक् विकास और जीवन को आह्लादपूर्ण बनाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित होने के लिए आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला झज्जर, हरियाणा में आप सादर आमन्त्रित हैं।

–राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

# सत्यार्थ-प्रकाश की उपयोगिता

– महात्मा चैतन्यमुनि

गत शताब्दी में अनेक समाज-सुधारक हुए मगर उन सबमें महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी हमें अनुपम एवं अद्वितीय लगते है। इसका सबसे प्रमुख कारण यह कि उन्होंने समूची मानवता को एक सूत्र में पिरोने का सार्थक प्रयास किया है। आज तक जितने भी सुधारक हुए है लगभग सभी ने या तो स्वयं की पूजा कार्यवाही या कालान्तर में उनके नाम से अनेक सम्प्रदाय बनें तथा परमात्मा के नाम पर उनकी पूजा-अर्चना आदि होने लगी मगर महर्षि जी घोषणा करते है कि उनका किसी प्रकार का कोई नया मत चलाने की जरा सी भी मनसा नहीं है बल्कि उन्होंने वही कुछ लोगों के सामने रखा है जो प्राचीन ऋषि-महर्षियों द्वारा परम्परा से चला आ रहा है। 'सत्यार्थ-प्रकाश' उनकी अनुपम रचना है। इस ग्रन्थ के अध्ययन तथा मनन और चिन्तन में सार्वभौमिकता के कुछ ऐसे सूत्र हमारे हाथ लगते है जो 'वसुधैव-कुटुम्बकम्' की भावना को चरितार्थ करने में पूर्णरूप से समर्थ है। इस ग्रन्थ में कुल चौदह समुल्लास है। प्रथम-समुल्लास में परमात्मा के अनेक नामों की व्याख्या, दूसरे में बालकों को किस प्रकार की शिक्षा-दीक्षा माता-पिता तथा आचार्य द्वारा दी जानी चाहिए, तीसरे में पठन-पाठन, चतुर्थ में विवाह की आयु, प्रकार, वर-वधु का चयन, आदर्श वर्ण-व्यवस्था तथा गृहस्थाश्रम को सुखी बनाने हेतु पति-पत्नी में अपेक्षित गुणों का निरूपण किया गया है। पंचम-समुल्लास में वानप्रस्थ और संन्यास का उल्लेख, छट्ठे में राजधर्म, सातवें में ईश्वर एवं वेद की चर्चा, आठवें में सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय, तीन अनादि सत्ताओं, सृष्टि का प्रयोजन आदि, नौवें में विद्या-अविद्या, बन्ध-मोक्ष तथा मुक्ति और दसवें में आचार-अनाचार, भक्ष्य-अभक्ष्य आदि के बारे में विचार किया गया है। ग्याहरवें-समुल्लास में उन्होंने आर्यवर्तीय मतमतान्तरों का, बाहरवें में चारवाक्, बौद्धादि नास्तिक मतों का, तेहरवें में ईसाई-मत का तथा चौदहवें में ईस्लाम-मत का तर्कपूर्ण वैज्ञानिक तथा सृष्टिनियमानुकूल सार्थक एवं सटीक समालोचनात्मक विवेचन किया है।

ग्रन्थ का प्रयोजन भूमिका में लिखते है-'मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है...' इस ग्रन्थ की रचना के पीछे उनका पूर्वाग्रह, दुराग्रह या पक्षपात आदि नहीं था-'यद्यपि मैं आर्यवर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और वसता हूँ, तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ, वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतोन्नतिवालों के साथ भी वर्त्तता हूँ. .. पक्षपाती होता, तो जैसे आजकाल के स्वमत की स्तुति मण्डन ओर प्रचार करते, और दूसरे मत की निन्दा हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर है...।'

आज तथाकथित ढोंगी गुरुओं के कारण समाज में पाखण्ड एवं आंडम्बर की आँधी सी आ गई है। व्यक्ति धर्म, कर्म, उपासना आदि के वास्तविक अर्थ खो चुका है, अन्धे अन्धों को हांककर महाविनाश की ओर ले जा रहे है। दूरदर्शन पर जिस प्रकार मत-मज़हब और अनेक पाखण्डितों, भविष्य-वक्ताओं तथा कष्टनिवारकों की बाढ़ आई है उसमें बुद्धिहीन लोग आकण्ठ डूबे हुए है। बहुत ही आश्चर्य होता है कि जन-साधारण अपनी बुद्धि का जरा सा भी प्रयोग नहीं करता है। बलिक पढ़े-लिखे लोगों को भी इन महा-पापी ढोंगियों के चंगुल में फंसे हुए देखकर उनके भोलेपन और बुद्धिहीनता पर तरस आता है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि इस ग्रन्थ का अध्ययन, मनन और चिन्तन करने वाले को कोई भी ढोंगी ठग नहीं सकता है क्योंकि इसमें लगभग प्रत्येक विषय पर वेदों के आधार पर, सप्रमाण व तर्कयुक्त विचार विवेचित है। इसके अध्ययन से ही व्यक्ति सत्य-ज्ञान, सत्य-कर्म और सत्य-उपासना से जुड़कर मानव जीवन के महत्व को समझ सकता है, अन्यथा आनेवाली पीढ़ी नास्तिक होकर अपने शाश्वत्-धर्म, आप्त-पुरुषों की गरिमा तथा आदर्शों को भूलकर निन्तात दिशाहीन हो जाएगी और यह हिन्दू नाम का जीव पूरी तरह से अपना अस्तित्व खो बैठेगा। हम डंके की चोट पर यह बात कह सकते है कि यदि हिन्दुओं (आर्यों) को कोई बचा सकता है तो वह

'सत्यार्थ-प्रकाश' ही है। क्योंकि सत्य के प्रकाश से ही अज्ञानान्धकार दूर हो सकेगा तथा समस्त पाखण्डियों की पोल-पट्टी तुरन्त धराशाई हो सकेगी। इसके अध्ययन से आज तक न जाने कितने ही दिशाहीन लोगों ने अपने जीवन संवारे है तथा इसी ग्रन्थ ने राष्ट्रीय-चेतना एवं सामाजिक समरसता का सार्वभौमिक व सार्वकालिक आधार प्रस्तुत किया है। 'सत्यार्थ-प्रकाश' वास्तव में ही 'गागर में सागर' उक्ति को चरितार्थ करता है क्योंकि यह हजारों ग्रन्थों का निचोड़ है। आज के इस अन्धे युग में इस ग्रन्थ की आवश्यकता एवं उपयोगिता पहले से भी और अधिक बढ़ गई है क्योंकि इसके अध्ययन से ही व्यक्ति को प्रभु-प्रदत्त वेद-रूपी (ज्ञान) चक्षु प्राप्त हो सकते है तथा वह अपने जीवन के चतुर्दिक-विकास एवं लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

-महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश, 174401, चलभाष 09418053092

# आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. चौ. मित्रसेन जी सिन्धु आर्य, उद्योगपति, रोहतक
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भेरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री स्वदीप दास जी गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
48. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
49. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
50. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
51. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
52. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
53. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
54. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
55. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
56. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
57. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
58. यज्ञ समिति झज्जर
59. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
60. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
61. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
62. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
63. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
64. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
65. श्री अनिल जी मलिक, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
66. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़

# जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

- श्रीमति सुदेश सन्दूजा

समय कभी अच्छा या बुरा नहीं होता, हमारा दृष्टि कोण उसे अच्छा या बुरा बना देता है। कहा गया है, कोई देखता है, कीचड़ में कमल और किसी को चांद में भी दाग नजर आता है। हम किसी भी घटना या परिस्थिति को किस नजर में देखते हैं यह हमारी विचारधारा पर निर्भर करता है। बुराईयों को देखना अर्थात कमल को देखना। बुराईयों को देखेंगे तो घृणा आएगी और अच्छाईयों को देखेंगे तो मन खुशियों से भर जाएगा। जो जैसा होता है, वो दूसरों को वैसा ही समझता है। एक तालाब के एक किनारे पर प्रातः चार बजे एक साधु और दूसरे किनारे पर एक चोर स्नान करता था। साधु नहा धोकर पूजा-पाठ ध्यान आदि करता था और चोर रात भर चोरी करके सुबह स्नान कर आराम करता था। साधु सोचता था, सामने वाला व्यक्ति मेरी ही तरह कोई भक्त होगा। चोर सोचता था, दाढ़ी-मूहं मूंछ वाला व्यक्ति जरूर मेरी तरह ही चोर होगा। जिसकी जैसी दृष्टि होती है, जिन्दगी उसे वैसी ही नजर आती है। या तो खुशनुमा जिन्दगी या फिर दुःख और अशान्ति से भरी जिन्दगी जीवन तो एक प्रभु का उपहार है। पेड़ पर बैठी मतवाली बुलबुल, कह रही थी, जिन्दगी एक मधुर गान है। एक कीड़ा जो मिट्टी में फंसा हुआ है, निकल नहीं पा रहा, बोला जिन्दगी कड़ी मेहनत का नाम है। खिलती कली बोली, जिन्दगी मुस्कराने का नाम है। उस वक्त बारिश हो रही थी, तब एक सज्जन बोले, जिन्दगी गम का दरिया है, हवा में उड़ते पंछी ने कहा जिन्दगी एक आजादी है। पिंजरे में कैद तोते ने कहा, जिन्दगी एक बन्धन है। एक राहगीर ने कहा जिन्दगी एक अनमोल यात्रा है जिसमें कभी कांटे तो कभी फूल हैं परन्तु जीवन प्रभु का दिया एक सुन्दर उपहार है।

ये अलग अलग परिभाषाएं अलग अलग विचार धाराओं पर निर्भर है। कोई कितना भी बुरा क्यों न हो, उनमें एक न एक अच्छाई जरूर होती है। अच्छा-अच्छा देखने से एक दिन हम अवश्य अच्छे बन जाएगें। यह सत्य है कि एक बुराई इंसान की सभी अच्छाइयों को ढक देती है लेकिन यह भी सत्य है कि इंसान अगर चाहे तो एक बुराईयों पर विजय भी प्राप्त कर सकता है। लेकिन सृष्टि तब बदलेगी जब दृष्टि बदलेगी और दृष्टि बदलने के लिए सोच को बदलना बेहद जरूरी है। - धर्मपुरा, बहादुरगढ़

# सच्चे फांसी चढ़दे

- मोहन लाल मंगो

सतयुग में झूठ और झूठे नगण्य थे
त्रेतायुग में लोग मर जाते थे वादे को जीवन सवते थे
द्वापर में कुल-वंश का सर्वनाश हो,
भीष्म प्रतिज्ञा सुरक्षित रहती थी
कलियुग में सच और सच्चे नगण्य है
कलियुग में वायदे का कत्तल दोता है,
स्वार्थी तत्व जीवनन्त रखते है
कलियुग में प्रतिज्ञा का सर्वनाश कर देते है
प्रतिज्ञा केवल वोट से करते है
जो मात्र रद्दी कागज है
मतदाता के हितों के रक्षक के लिए
कसमें, वादे, कार, वफा सब बातें है
बातों का क्या रात गई बात गई।
तुझे आ गले लगा लूं, है गरदिशे जमाना
जो कल तक थी, हकीकत वह बन गई दुखान्त फसाना
बात करोड़ो में होती है, खेद है मिले न अब
अठनी, चवन्नी कल्याणकारी पीतलवाला एक आना
करोड़ो में वीरान है सकून का ताज महल
खाते थे मानसिक विकास के पौष्टिक व सन्तुलित आहार
मिलता नहीं अब जो सात्विक खाना
न मरदान, न जनाना, अब तो चारो ओर नग्नता का जमाना
झूठे को सेल्युट सच्चे वकील की वाकपटुता से
कानूनी दांव पेच में भर जाना

# हंसो-हंसाओ

– रवि शास्त्री

1. बच्चों की देखभाल के लिए एक महिला उम्मीदवार से पूछा गया- क्या आपको बच्चों के साथ रहने का कुछ अनुभव है?
महिला- हाँ मैं खुद काफी दिनों तक बच्ची रही हूं।

2. एक औरत ने फकीर से झिड़कते हुए कहा-तुम हट्टे कट्टै हो जवान हो मेहनत मजदूरी क्यों नहीं करते भीख मांगना बुरी बात है।
फकीर (औरत से)- और आप भी तो इतनी सुन्दर है कि फिल्म की हीरोईन बन सकती हैं, फिर पर्दे पर आने की बजाय घर में काम कर रही हैं। बहुत बुरी बात है।
औरत (फकीर से) जरा ठहरो, मैं तुम्हारे लिए कुछ लाती हूँ।

3. पप्पू-यार बंता कल रात मेरे सपने में यमराज आये और बोले-मुझे तेरी जान चाहिए 'मस्ट'
चप्पु-तो तूने क्या किया
पप्पु- यार मैंने अपनी बीवी को आगे कर दिया और बोला- लेडिज फर्स्ट की परम्परा है इसीलिए 'लेडिज फर्स्ट'।

4. संता की माता जी का निधन हो गया, बंता बोला अम्मा हमें भी ले जाती दो चार आदमी और भी बोले- अम्मा हमें भी ले जाती।
संता गुस्से से-''अबे गधो, अम्मा क्या टाटा सुमो करके गई है क्या जो सबको लेकर जाती।

5. पप्पु लाइब्रेरी में गया और तीन घंटे एक किताब को पढ़ने के बाद बोला, बहुत बोरिंग किताब थी, इतने सारे करेक्टर और कहानी कुछ भी नहीं''
लाइब्रेरियन- पप्पु जी, वो टेलीफोन डायरी है।

6. संता- यार संता हम दोनों हमेशा कुंवारे रहेंगे कभी शादी नहीं करेंगे।
बंता- हाँ और ना अपने बच्चो को करने देंगे।

– आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

# बुद्धिमान श्रमिक

– अशोक सिसोदिया

नगर सेठ के मन में आया, सुन्दर एक भवन बनावाऊँ,
इक पहाड़ के उच्च शिखर पर, उसका शिलान्यास करवाऊँ।
कारीगर सब किए इकट्ठे, शुरु काम को करवाया,
कैसा भवन उसे बनवाना, उन लोगों को बतलाया।

नित्य भोर कारीगर सेवक, उस पहाड़ पर आते थे,
शाम ढले औजारों के संग, वापिस घर को जाते थे।
इतने सारे लोगों का, खाना भी कम न होता था,
बड़ा एक गट्ठर बन्धता था, जिसको कोई ढोता था।

उन मज़दूरों में था एक श्रमिक, छोटी सी कद काठी वाला,
हँसता स्वयं हँसाता सबको, उन सब श्रमिकों का प्यारा।
खाने का गट्ठर भारी था, सारे उससे बचते थे,
केवल वह न पड़े उठाना, खूब जतन वो करते थे।
उस छोटे मजदूर ने बोला, मैं इसको ले जाऊँगा,
आपस में न करो लड़ाई, नित्य ये बोझ उठाऊँगा।
उस दिन से वो छोटा प्राणी, गट्ठर रोज उठाता था,
और शाम को साथ सभी के, हाथ हिलाते आता था।

इक दिन उससे सबने पूछा, क्यों तूने ये काम लिया,
इतना कठिन काम करने का, क्यूँ कर तूने ठान लिया।
तू तो बुद्धिमान बहुत था, क्यों फिर पकड़ा ऐसा काम,
अब भी यदि तू चाहे तो, हम कटवा दें तेरा नाम।

सबकी बातें सुनकर टिंगू, पहले थोड़ा मुस्काया,
क्यों उसने ये काम लिया है, उनको सबकुछ बतलाया।
भारी तुम औजार उठाए, रोज वहाँ पर जाते हो,
दिन भर भारी काम हो करते, शाम ढले घर आते हो।

तब फिर वो औजार उठाए, वापिस पड़ता है आना,
दिन-भर में आराम हूँ करता, बोझ नहीं पड़ता लाना।
क्या हूँ तुम्हीं विचार करो, निर्बुद्धि या बुद्धिवाला,
क्षमा करो अब बन्धवाना है, वो गट्ठर खाने वाला।
सारे श्रमिक अवाक खड़े थे, सुनकर उस टिंगू की बात,
श्रम से बुद्धि सदा बड़ी है, समझ आ गई उनको आज।
बच्चो सदा विवेकी बनना, बुद्धिमान और प्रज्ञावान,
तुम्हीं बनोगे सदा विजेता, कितना भी दुष्कर हो काम।

– आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

# वाणी दिव्य महान है

**- शिवकरण दूबे 'वेदराही'**

हिन्दूस्ताँ है देश हमारा, हिन्दी इसकी शान है
संस्कृत की ये प्यारी बेटी, भारत की पहचान है।।

जनमानस की कंठहार ये, जन-जन की वाणी है
उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम में जानी पहचानी है
जनमन की अभिलाषा यह, राष्ट्रप्रेम गुणगान है।
हिन्दूस्ताँ है देश हमारा, हिन्दी इसकी शान है।।

भारत का स्वर्णिम अतीत भी हिन्दी में अवतरित हुआ
संत कबीर, सूर तुलसी का दर्शन भी संचरित हुआ
ऋषिवर दयानन्द स्वामी का हिन्दी में फरमान है।
हिन्दूस्ताँ है देश हमारा, हिन्दी इसकी शान है।।

विद्यापत कोकिल का गुंजन, मीरा के वीणा के तार
मैथिलि माखन की पुकार ये, दिनकर की विप्लब झंकार
प्रेमचन्द की कथा कहानी, विस्मिल का अरमान है।
हिन्दूस्ताँ है देश हमारा, हिन्दी इसकी शान है।।

नवोत्थान युग की ये वाणी, जागृत करती थी सबको
विजयी विश्व तिरंगे का भी गान सुनाती थी सबको
आजादी की कुर्बानी और देश का गौरव-गान है।
हिन्दूस्ताँ है देश हमारा, हिन्दी इसकी शान है।।

प्रजातंत्र की रीत यही है, जनता की ही भाषा हो
एक सूत्र में बंधे राष्ट्र यह, जैसे जीवन-आशा हो
राष्ट्र एकता की संपोषक, वाणी दिव्य महान है।
हिन्दूस्ताँ है देश हमारा, हिन्दी इसकी शान है।।

- शक्ति नगर, जिला-सोनमद्र, उत्तर प्रदेश

- ज्ञान-कर्म-उपासना में जो-जो कमी हो उसकी पूर्ति ईश्वर भक्ति से हो जाती है। इसलिए भक्ति योग ही सबसे श्रेष्ठ योग है।

-मनुष्य का सच्चा कर्तव्य क्या है? ईश्वर के सिवा किसी दूसरी चीज से प्रीति न जोड़ना।

**-राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084**

# " इन्सानियत ही धर्म"

**- ऋषि राम कुमार**

छोड़िये शिकवे शिकायत बात कुछ और कीजिए।
जिन्दगी के हर लम्हे को प्यार से भर दीजिये।

छोटे बड़े के फर्क को-दीजिये दिल से निकाल,
ऊँच नीच की बात को अब ढको दिवार कीजिये।

भगवान की कृपा से गर आप धन धान्य से भरपूर हैं,
किसी गरीब की कुटिया में, इक दीप जला ही दीजिये।

धर्म का पालन करें और सबके उच्च विचार हों,
अपने घर में सब बच्चों को धर्म की शिक्षा दीजिए।

मन्दिर मस्जिद की बातों को कीजिये अब दर किनार,
इन्सानियत के धर्म को अब अपना ही लीजिये।

बाल विवाह और दहेज प्रथा की बुराई छोड़िये,
भ्रूण हत्या की बात को दिल से निकाल ही दीजिए।

घर में और बाहर सभी नर नारियों का सम्मान हो,
किसी भी हालत में किसी से झगड़ा मत कीजिए।

भारत माँ की सन्तान है हम-देश का नाम रोशन करो,
छोटी छोटी बातों से ऋषि दिल को हवा मत दीजिए।

- 246/4, मॉडल टाऊन, गुड़गांव, हरियाणा, मो. 9968460321

## आनन्दपूर्ण जीवन हेतु

दु:ख, अशान्ति, तनाव, वैमनस्य आदि भावों को रूपान्तरित कर सुख शांति, प्रेम करूणा एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण, मानसिक दुर्भावनाओं से निर्जरा स्वयं के व्यक्तित्व का सम्यक् विकास और जीवन को आह्लादपूर्ण बनाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित होने के लिए आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला झज्जर, हरियाणा में आप सादर आमन्त्रित हैं।

-राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

# संतोष की महिमा

– यशपाल जैन

बचपन में पाठशाला में पढ़ाई जाने वाली एक पुस्तक में ये पंक्तियां पढ़ी थी–

गोधन, गजधन, बाजधन औरं रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।।

इनका अर्थ गुरुजी ने बताया था 3 आदमी के लिए गाय, हाथी घोड़ा तथा रत्न की खान, इस सब धन का बड़ा मूल्य होता है, लेकिन जब उसे संतोष-रूपी धन प्राप्त हो जाता है तो सारे धन धूलि के समान हो जाते हैं, अर्थात् संतोष-धन के आगे किसी भी धन का मूल्य नहीं है।

ये पंक्तियां इतनी अच्छी लगीं कि आज भी याद हैं। उनका अर्थ भी तब समझ में आ गया, किन्तु उनका मर्म अब समझ में आता है, जबकि जीवन का उतार आरम्भ हो गया है।

प्रत्येक व्यक्ति के मन में स्वाभाविक रूप से धन की लालसा होती है और वह उसके अर्जन के लिए प्रयत्न करता है। धनार्जन की यह लालसा कभीं शान्त नहीं होती है बढ़ती ही जाती है। एक बार कलकत्ता के एक महानुभाव ने अपना अनुभव सुनाया। वे अपने घर से खाली हाथ उस महानगरी में गये थे। सोचा, पचास हजार की नौकरी लग जाये तो काफी है। पचास की नौकरी लगी तो कुछ दिन बाद सोचने लगे, काम तो चल जाता है, पर हैरानी रहती है। यदि सौ की नौकरी लग जाती तो तंगी न रहती। सौ की लगी तो फिर दो सौ की इच्छा पैदा हो गई। इस तरह वह लखपति और फिर शायद करोड़पति बन गये, किन्तु उनकी लालसा चिर युवती बनी रही।

यह अनुभव एक व्यक्ति का नहीं है, सबका है। जो धन संचय की लालसा से मुक्त हो जाते हैं, उन्हें अपवाद मानना चाहिए। कबीर ने चेतावनी दी थी।

पानी बाढ़ै नाव में घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथा उलीचिये, यही सयानों काम।।

नाव में पानी भर जाता है तो नाव डूब जाती है। घर में धन सम्पति बढ़ती है तो उसके संचय में विपत्ति भी आती है। प्राय: देखने में आता है कि धन के पीछे बाप-बेटे, भाई-भाई पराये बन जाते हैं। और कहीं-कहीं तो यह व्याधि इतनी बढ़ जाती है कि वे एक-दूसरे की जान ले लेते हैं। यही देखकर कबीर ने घर में बढ़े धन को निकाल देने की सलाह दी थी। मानव की इसी दुर्बलता को देखकर भगवान महावीर ने ''परिग्रह-परिणाम'' की बात कही थी। उन्होंने धन को हेय नहीं बताया था, अपनी नितान्त आवश्यकता की सीमा बँधवाई थी। यह सीमा संतोष की ही पर्याय थी। गाँधीजी ने भी इसी बात को दूसरे शब्दों में स्पष्ट करते हुए कहा था कि अपनी अनिवार्य आवश्यकताएं पूरी करने के बाद जो बचे, उसका अपने को ''न्यासी'' ट्रस्टी। मानो और उसका उपयोग समाज के कल्याण के लिए करो।

कहावत है कि मनुष्य की इच्छा कभी पूरी नहीं होती है एक इच्छा पूरी होती है कि दूसरी पैदा हो जाती है। इस तरह उनका सिलसिला बराबर चलता है। ऐसा इसलिए होता है कि व्यक्ति में फलासक्ति होती है। यह फलासक्ति ही इच्छाओं को उत्पन्न करती है। इसी से गीता में तथा धर्म ग्रन्थों में बार-बार कहा गया है कि कर्म करो, किन्तु उसका फल पाने की इच्छ्ज्ञ मत रखो। यदि फल की इच्छा नहीं होती तो उसके फल की वासना मनुष्य से नहीं चिपटेगी और तब उसके कर्मो की निर्जरा हो जाएगी। यही तो जीवन चरम लक्ष्य है।

कहा गया है कि ''जो अपने सिर पर मुकुट धारण करता है, वह सदा चिंतित रहता है। बात ठीक है। जिसकी तिजोरियां भरी रहती है, वह निरन्तर भयाक्रान्त रहता है और उसे अपने धन की रक्षा के लिए फाटक पर संगीनधारी चौकीदार खड़ा करना पड़ता है। उसकी नींद हराम हो जाती है। इसके विपरीत, जिसके पास संतोष का परम धन है, वह चैन की नींद सोता है, डर उसके पास फटक नहीं पाता।

एक बार किसी महिला का इकलौता बेटा मर गया। मृतक को गोद में लेकर माँ बिलखती हुई भगवान बुद्ध के पास गयी। प्रार्थना की ''भगवन्। मेरे इस बच्चे को जिला दीजिए। ''बुद्ध बोले, ''जाओ''। किसी चिन्तामुक्त व्यक्ति की पोशाक ले आओ।'' मां घर-घर धूमी पर उसे ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं मिला, जिसे कोई-न-कोई चिंता न हो। अन्त में वह नदी किनारे पेड़

की आड़ में बैठे एक आदमी को मस्ती में गाते सुनकर वहाँ गई। गिड़गिड़ाइ कर बोली, ''भैया, तुम चिन्ता से दूर जान पड़ते हो। अपनी पोशाक मुझे दे दो। मेरा बच्चा जी जायेगा। उस व्यक्ति ने कहा, '' बहन, मैं तुम्हें क्या दूँ। मेरे पास तो एक लंगौटी को छोड़कर और कुछ नहीं है।''

कहानी प्रतीक रूप में है, पर उसके पीछे एक बहुत बड़ा सत्य छिपा है। संतोष के लिए अपरिग्रह अनिवार्य है। जिसके मन में कोई लालसा नहीं है, जिसकी कोई इच्छा नहीं, वह किससे डरेगा और क्यों डरेगा और जब किसी प्रकार का डर नहीं तो चिन्ता किस बात की होगी। संतोष की यही तो महिमा है।

यूनान का बादशाह सिकंदर बड़ा महत्वाकांक्षी था। उसने अनेक देश जीते और अपारधन सम्पत्ति इकट्ठी की। जीवन का अन्तिम क्षण आया तो उसकी आखे खुल गई। उसने देखा कि वह अकेला ही जा रहा है। जो कुछ उसने बटोरा था, सब यहाँ छूट रहा है। तब उसने अपने दीवान को बुलाया और कहा कि मेरे दोनों हाथ कफन से बाहर कर देना। उस संबंध में एक कहावत चल पड़ी:

आया था यहां सिकन्दर दुनियां से ले गया क्या?
ये दोनों हाथ खाली बाहर कफन से निकले।

यही जीवन की सच्चाई है। आदमी कितनी आपाधापी करता है, लेकिन अन्त समय कुछ भी उसके साथ नहीं जाता, यहां तक कि उसका कुटुम्ब-कबीला भी यहीं रह जाता है। इस स्थिति की अनुभूति संतोष की आधारशिला है। समझ लेना चाहिए कि संतोष का अर्थ सब कुछ त्याग देना नहीं है। यह हर किसी के लिए सम्भव भी नहीं है। आखिर जीवन यापन के लिए अनेक वस्तुओं की आवश्यकता होती है। जो संसार को छोड़कर निवृत्ति के मार्ग पर चलते हैं। उन्हें भी खाना चाहिए और भी कुछ चीजें चाहिए। वास्तव में संतोष मन की एक अवस्था है, जिसमें व्यक्ति संसार में रहते हुए भी उसके माया-जाल में फंसता नहीं। सारे बंधनों के बीच ठीक वैसे ही रहता है, जैसे जल के बीच कमल रहता है। संतोषी व्यक्ति के मन पर कोई भार या तनाव नहीं होता, वह सांस की तरह सहज और फूल की तरह हल्का होता। तभी वह उस सुख का आनन्द लेता है जो मानव संतोष के साथ सादगी और सात्विकता जुड़े हुए हैं। जिसके जीवन में आडम्बर है, वह कभी संतोष अनुभव नहीं कर सकता, और जिसमें सात्विकता नहीं है, वह कभी सुखी नहीं रह सकता। उसके अंतर में ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, बेईमानी आदि का दूषित चक्र हर पल चलता रहता है और वह अपने ही बुने जाल में जकड़ा रहता है। सुख उसके लिए मृग-मरीचिका के समान होता है।

आडम्बर-प्रिय मनुष्य के लिए पदार्थ का मूल्य होता है और वह उसी की उपलब्धियों में अपने जीवन का ताना-बाना बुनता रहता है। ऐसा व्यक्ति भटकता रहता है। वह सार और असार में भेद नहीं कर पाता। उसे भान नहीं होता है कि किस रास्ते पर चलकर मानव जीवन सार्थक हो सकता है।

वर्तमान युग भौतिकता का युग है। इस युग का नारा है, जीवन में जितना असंतोष होगा, उतना ही संघर्ष होगा और जीवन में जितना संघर्ष होगा उतनी ही प्रगति होगी। यदि बारीकी से देखा जाये तो यह मार्ग उस प्रगति का मार्ग है, जो सुख नहीं, दु:ख की जननी है। आज तकनीक और विज्ञान ने दुनिया की कायाकल्प कर दिया है। आश्चर्यजनक आविष्कार कर दिखाये हैं, लेकिन इन सब उपलब्धियों के बावजूद आदमी का सुख-चैन छिन गया है। आज सारा संसार अनुभव कर रहा है कि सुख संतोष में है, असंतोष में नहीं है।

भारतीय मनीषा के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यही है कि मानव सुखी रहे। सुख की प्राप्ति के लिए उसने अनेक सूत्र दिये हैं। ''सर्वे भवन्तु सुखिन: ''की कामना को लेकर उसने सूत्र दिया है ''संतोष: परम सुखम् ''। जन-सामान्य की भाषा में यह कह सकते हैं कि संत व्यक्ति ही परम सुखी होता है, क्योंकि संतोष में ही वह सुख समाया हुआ है, जो मनुष्य के लिए स्मरणीय है।

सब जानते हैं कि हम जैसा बोते है, वैसा ही काटते हैं। असंतोष के बीज बोकर संतोष की फसल नहीं काटी जा सकती है। जो संतोष के बीज बोता है, वह सुख से मालामाल हो जाता है, क्योंकि संतोष और सुख एक-दूसरे से सम्युक्त हैं।

संघर्ष मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाने के लिए समुपस्थित होते है। इसलिए संघर्षो को अपना सौभाग्य समझना चाहिए।
**–राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084**

# सौ वर्षों तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा कर

–कन्हैया लाल आर्य

यजुर्वेद के 40वें अध्याय का दूसरा मन्त्र है–
**ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।**
**एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।**

(इह) यहाँ इस संसार में (कर्माणि) सत्कर्मो को करता हुआ (शत समाः) सौ वर्षो तक (जिजीविषेतं) जीने की इच्छा कर (त्वयि) तुझ (नरे) मनुष्य में कर्म (न लिप्यते) नहीं लिप्त होता है (इतः) उससे (अन्यथा) दूसरा और कोई मार्ग (न) नहीं है।

इस मन्त्र में दो कर्तव्यों का विधान किया है–

(1) कर्म करते हुए सौ वर्षो तक जीने की इच्छा कर। (2) कर्म करते हुए अपने आप को इसमें लिप्त मत कर। इस मानव जीवन में हमने कर्मो को करते हुए ही जीना है। कर्म तीन प्रकार के होते हैं– (1) शुभ कार्य (2) अशुभ कार्य (3) शुभाशुभ मिश्रित कर्म।

वेद कहता है "शुभ कर्म करो।" अशुभ व मिश्रित कर्म मत करो अन्यथा बन्धन में पड़े रहोगे। शुभ कर्मो में भी यदि लिप्त हो जाओगे तो भी शुभ कर्मो का फल भोगने के लिए जन्म लेना ही पड़ेगा, जन्म लेना भी बन्धन है। शुभ कर्म भी साधन है, साध्य नहीं। इसलिए उसमें लिप्त नहीं होना। उनके फल की इच्छा मत करना। हम कर्म करने के लिए स्वतन्त्र है लेकिन फल पाने में परतन्त्र हैं। भगवान कृष्ण का गीता में यही मुख्य संदेश है–अतः कर्म करते हुए सौ वर्षो तक जीने की इच्छा कर। जगत् में कोई ऐसी वस्तु दिखाई नहीं देती जो क्रिया रहित हो। संसार का नियम ही क्रिया है यह संसार संसरति निरंतर चल रहा है, जगत् है गति में है। सृष्टि का महान से महान कार्य करने वाला सूर्य प्रति क्षण गति में रहता है, पृथ्वी गतिमान् है, चन्द्रमा गति में है, सृष्टि का महान से महान कार्य करने वाला सूर्य प्रति क्षण गति में रहता है, पृथ्वी गतिमान् है, चन्द्रमा गति में है, सृष्टि का प्रत्येक कण गतिमान् है, प्रत्येक ग्रह उपग्रह गतिमान् हैं जगत् की छोटी से छोटी वस्तु कण है, जिसके भीतर गति हो रही है और जो स्वयं भी सूर्यमंडल की तरह गति में है। जब कर्म का साम्राज्य जगत्-व्यापी है तो मनुष्य उससे किस प्रकार बच सकता है फिर मनुष्य के अकर्मण्य होने का क्या तात्पर्य? अतः वेद का यह मन्त्र हमें पल-पल कर्मनिष्ठ होने की प्रेरणा दे रहा है। यह मन्त्र जीवन की अंतिम घड़ी तक कर्म करने की ओर इंगित कर रहा है।

कन्हैया लाल आर्य

इस मन्त्र में आगे कहा है "सौ वर्षो तक जीने की इच्छा कर।" केवल इच्छा ही मत कर बल्कि पुरुषार्थ भी कर। सौ वर्षो तक जीने के लिए तीन बातों का पालन करना आवश्यक है:–

(1) आहार– सात्विक आहार लिया जाना चाहिए। (2) निद्रा– आयु, अनुसार उचित निद्रा भी लेनी चाहिए। (3) ब्रह्मचर्य– शरीर, मन और वाणी से कभी ब्रह्मचर्य विहीन नहीं होना चाहिए।

गृहस्थ में सन्तान तो उत्पन्न करें परन्तु जीवन को वासना के कीचड़ में न लिप्त करें। स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने अपनी पुस्तक 'उपनिषद् प्रकाश' में इस मन्त्र की व्याख्या में एक दृष्टान्त इस प्रकार दिया गया है– एक बार किसी धनी के पास एक मनुष्य पहुँचा और उससे नौकरी की माँग की। सेठ ने कहा– 'क्या वेतन लोगे?' नौकरी के अभिलाषी ने कहा, मेरा वेतन यही है कि मुझे हर समय कार्य मिलता रहे, जब तक कार्य नहीं दोगे तो मैं तुम्हें मार डालूंगा। धनी ने सोचा, यह तो बहुत अच्छा सेवक है, वेतन भी नहीं माँग रहा, सारे कार्य करने को उद्यत है। इस प्रकार सोचकर धनी व्यक्ति ने उसको नौकर रख लिया। नौकर की शर्त मान ली गई। नौकर बहुत शीघ्रकारी था। सेठ के मुँह से कार्य निकला नहीं कि नौकर उसे कार्य को पूरा कर देता। कुछ ही दिनों में धनी के सब कार्य समाप्त हो गये। अब उसे चिंता हुई कि यह मुझे मार डालेगा। इस

चिंता से धनी व्याकुल रहने लगा। खान-पान नीरस हो गया। एक दिन धनी के पास कोई बुद्धिमान मित्र आये। उन्होंने कहा इतनी धन-संपत्ति होते हुए भी इतने दुर्बल क्यों होते जा रहे हो? धनी ने सारी कथा कह सुनाई। उस मित्र ने कहा कि तुम इसे केवल अपने कार्यो में क्यों लगाते हो, पड़ोसी के, मौहल्ले वालों के, नगर के, सारी मानवता के कार्यो को अपना समझकर इसमें इसे लगाओ। ये असंख्य कार्य इससे नहीं निपटेंगे और तुम इसके हाथों से बचे भी रहोगे। यही अवस्था हमारे मन की है। जिस समय यह शुभ कर्मो से जरा-सा अलग हुआ नहीं कि नाशकारी कार्मो में लग जायेगा, अत: मन को सदैव शुभ कर्मो में लगाए रखो। ऐसे करने से मुक्ति मिलेगी।

निष्काम कर्म ही मोक्ष देने वाले हैं, सकाम कर्म पुर्नजन्म की ओर ले जाते हैं। सांसारिक सुख को सामने रखकर जो कर्म किए जाते हैं उन्हें सकाम कर्म कहते हैं। अत: यदि बंध से मुक्त होना है तो मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की बजाय जन्म ही न हो तो उसके लिए हमें निष्काम कर्म करने होंगे। जब कर्मो को कर्तव्य समझकर किया जाता है तो फल की इच्छा नहीं होती, संतोष बना रहता है। कर्म का त्याग नहीं करना है। पूरे जीवन भर करते जाना है और पूरे जीवन भर शुभ कर्मो के फल की इच्छा भी नहीं करनी है, यह परम संतोष है। शान्ति एवं आनन्द प्रदान करने वाला है। ऐसा कर्म बंधन नहीं होता जिस प्रकार कमल कीचड़ में रहता हुआ भी अपने आप को कीचड़ में लिप्त नहीं करता, उसी प्रकार हमें भी कर्मो में लिप्त नहीं होना है तभी हम सभी कार्य ईश्वर आज्ञा मानकर करेंगे और हमे फल की इच्छा भी नहीं रहेगी। फल की इच्छा को सामने रखकर, कर्म करने की इच्छा की पूर्ति होने पर हर्ष, सुख और न पूरी होने पर शोक व अशान्ति पैदा होती है। कर्म करने के अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग नहीं है। इस पर जीव सोचने लगा कि इतना लम्बा जीवन जीकर क्या करूंगा। जीवन जितना लम्बा होगा उतने ही अधिक पाप होंगे। कर्म करना भी तो भय से रहित नहीं है। कर्म का फल भोगना पड़ेगा। फल भोगने के लिए शरीर धारण करना पड़ेगा तो मानव झंझटों में ही फंसा रहेगा। ऐसा सोचकर जीव उदास हो जाता है तभी तो कहा है कि कर्म तो कर और फल की इच्छा मत कर। इस प्रकार की जब हमारी सोच बन जायेगी तो हमें कर्म लिप्त न कर सकेंगे। जो लोग दूसरों की भलाई के लिए कर्म करते हैं, से सदा सुखी रहते हैं। इसलिए परोपकार की भावना, जो शुभ है, सदा मन में रखकर संसार के उपकार के लिए कटिबद्ध रहना चाहिए। जब तक प्राण हैं कभी इस परोपकार के कर्मो से अलग नहीं होना चाहिए। मनुष्य जीवन बहुत ही मूल्यवान है, इसे व्यर्थ में नहीं बिताना चाहिए। जो लोग ईश्वर आज्ञा की उपेक्षा कर व्यर्थ में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं वह मूर्ख हैं। जो स्वार्थ के बिना निर्लिप्त भाव से संसार के उपकार में लगे रहते हैं उनके कर्म बंधन का कारण नहीं बनते। अत: शुभ-अशुभ कर्मो पर विचार करके सौ वर्षो तक पुरुषार्थ करते हुए जीवन को व्यतीत करें। जीवन की सार्थकता इसी में है। यही जीवन का सार है।

04/45, शिवाजी नगर, गुड़गांव,
मो. 09911197073


## आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

| | |
|---|---|
| यज्ञ समुच्चय | मूल्य : 50 रु. |
| वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त | मूल्य : 25 रु. |
| स्वस्थ जीवन रहस्य | मूल्य : 20 रु. |
| फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट | मूल्य : 20 रु. |
| आत्मशुद्धि के सरल उपाय | मूल्य : 15 रु. |
| विद्यार्थियों के लाभ की बातें | मूल्य : 15 रु. |
| वृहद् जन्मदिवस पद्धति | मूल्य : 20 रु. |
| चाणक्य-दर्पण | मूल्य : 25 रु. |
| कल्याण-पथ | मूल्य : 20 रु. |
| प्राणायाम-विधि | मूल्य : 10 रु. |
| स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय | मूल्य : 15 रु. |

**प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507**

**दूरभाष** : 01276-230195 **चलभाष** : 09416054195

# शराब विरोधी दिवस ( 26 जून )

-इन्द्र देव

- गाँधी जी ने स्पष्ट रूप से कहा था कि स्वतन्त्र भारत में शराबबन्दी रहेगी क्योंकि परिवार के मुखिया या किसी सदस्य के शराब पीने से आगे चलकर वह परिवार बर्बाद हो जाता है।
- स्वतन्त्र भारत के संविधान में, गांधी जी की, शराब सम्बन्धी विचारों का कतई ध्यान नहीं रखा गया है।
- संविधान की सूची न. 2 राज्य सूची के क्रमांक 8 पर निम्न लिखा हुआ है।
  मादक लिकर अर्थात् मादक लिकर का उत्पादन, विनिर्माणा, कब्जा, परिवहन, क्रय और विक्रय।
- इस प्रकार शराब का उत्पादन व विक्रय राज्यों का विषय है।
- राज्य सरकारों को, शराब से अरबों/खरबों का राजस्व मिलता है। यह रकम बढ़ती जाती है क्योंकि दुकानों की संख्या व समय बढ़ा दिया गया है।
- राज्यों के समाज कल्याण विभाग को बहुत थोड़ी सी राशि मिलती है जिससे वे शराब के विरोध में विभिन्न तरीकों से प्रचार करते हैं।
- देश में जहरीली शराब भी बनती है और बिकती है जबकि इसके पीने से समय समय पर, अखबारों में, अनेकों के मरने की खबरें प्राय: छपती रहती है।
- एक प्रकार से कहा जा सकता है कि देश में शराब की नदियां बह रही हैं क्योंकि चुनाव प्रचार के समय, शादियों, शुभ अवसरों, त्यौहारों, होटलों, रेस्टोरेन्टों, ठेकों, दुकान पर विलायती व देसी शराब सर्वत्र/सरलता से उपलब्ध है।
- किसी 2 राज्य में कभी 2 प्रतिबन्ध लग जाता है किन्तु निकट वर्ती राज्यों में खुली छूट होने से उस राज्य में अवैध रूप से शराब आने लगती है फिर उसे भी प्रतिबन्ध हटाना पड़ता है।
- शराब एक प्रकार का विष है। पीने से फेफड़े गलने लगते हैं। शरीर में और कई बीमारियां लग जाती है।

अत: मैं मांग करता हूँ कि शराब के उत्पादन व वितरण को केन्द्रीय विषय बनाए जाए अन्यथा शराबबन्दी के लिए केन्द्रीय सरकार प्रचार कार्य को अपने अधीन करके गांधी जी के वायदे को पूरा करने का प्रयास तो करे ताकि परिवारों में बर्बादी रूके।

– पूर्व प्रधान, नगर आर्य समाज

# साहस एवं समर्पण के ज्वलन्त उदाहरण

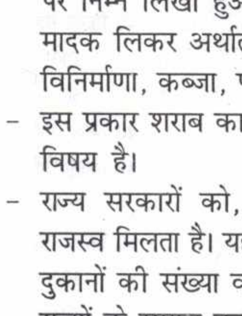

श्री चन्द्रभान जी चौधरी पुलिस विभाग से डी.सी.पी. के उच्चपद से सेवानिवृत हुए। इस विभाग में कार्यरत रहते हुए भी उनकी छवि निष्कलंक रही, यही कारण है कि आपको राष्ट्रपति पुलिस पदक और पश्चिम स्टार, स्पैशल ड्यूटी पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। यह अन्यों के लिए अनुकरणीय है।

राष्ट्रसेवा, लोगों के कष्ट निवारण के लिए चौधरी चन्द्रभान जी प्रतिबद्ध ही नहीं रहे, अपितु कटिबद्ध भी रहे, राष्ट्र के प्रति उनकी निष्ठा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में में उन्हें प्रतिष्ठा दी गई जो प्रलोभन के आगे कभी झुका नहीं और अपनी कर्त्तव्यपरायणता के वर्ग को इतना गतिशील रखा, वह कभी रुका नहीं।

चौधरी चन्द्रभान जी में विनम्रता है, परन्तु दैन्य नहीं। इनमें एक विचित्र सादगी भरा सौजन्य है, जिससे आदमी पहली ही मुलाकात में आत्मीय सा अनुभव करने लगता है।

आप आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के विशेष सहयोगी है। प्रत्येक महीने आश्रम के लिए दान एकत्रित करते है। आश्रम परिवार आप की सुख समृद्धि एवं सुदीर्घायुष्य की कामना करता है।

–राजहंस मैत्रेय

# आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

| | |
|---|---|
| श्रीमती रेशमा तंवर अध्यापिका, बालभारती स्कूल बहादुरगढ़ | 2100/- |
| श्रीमती शकुन्तला विकासपुरी, दिल्ली | 2000/- |
| श्री अनिल मलिक टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़ | 1100/- |
| स्व. भूपसिंह दहिया (की पुण्य स्मृति में) सैक्टर-9, बहा. | 1100/- |
| श्रीमती मायावती मदान धर्मपुरा बहादुरगढ़ | 1100/- |
| चौ. ओमप्रकाश सुपुत्र चौ. रामचन्द्र ओहल्याण गढ़ी सांपला | |
| श्री सत्यवीर जी राठी सैक्टर-6, बहादुरगगढ़ | 1100/- |
| श्री सुरेन्द्र जी मानकटाला पंजाबीबाग, दिल्ली | 1100/- |
| श्री विभू सूद सुपुत्र श्री विनयसुद पंजाबीबाग, दिल्ली | 1100/- |
| श्री विकास विजय बहादुरगढ़ | 1000/- |
| श्रीमती रामुदलारी जी बंसल वैदिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़ | 1000/- |
| श्री सतपाल यादव नजफगढ़, दिल्ली | 1000/- |
| चौ राजेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री चौ. ताले ओहल्याणगढ़ी, सांपला | 511/- |
| श्री रमेश चन्द्र पांचाल सुपुत्र श्री निहाल सिंह पांघाल, नेहरू पार्क, बहादुरगढ़ | 501/- |
| श्री उग्रसेन सुपुत्र रतनलाल बालोर बहादुरगढ़ | 501/- |
| सेठी रफ्रीजरेशन नाहरा नाहरी रोड, बहादुरगढ़ | 501/- |

## टीकरी दिल्ली से अन्न और प्राप्त दान

| | |
|---|---|
| श्री करतार सिंह जी आर्य | 2 बोरी गेहूं |
| श्री धर्मवीर सिंह, भू. देव सिंह | 1 बोरी गेहूं |
| श्री लव सिंह सलपाड़ | 505/- |
| श्री ध्रुव मांग बिरे | 551/- |
| श्री धर्मपाल सिंह सुपुत्र श्री सुलतान सिंह | 100 किलो गेहूं |
| श्री रणबीर सिंह सुपुत्र महेन्द्र सिंह | 100/- |
| श्री अमित सिंह सुपुत्र महेन्द्र सिंह | 1400/- |
| श्री आजाद सिंह | 201/- |
| श्री सतीश सुपुत्र श्री धर्मसिंह सोलपड़ | 151/- |
| डा. फरकन अली | 250/- |
| श्री महेन्द्र फौजी सुपुत्र श्री छत्तर | 50 किलो गेहूं |
| श्री जय सिंह जी बगड़ी | 50 किलो गेहूं |
| श्रीमती विद्यावती | 101 रूपये |
| श्री राजसिंह सुपुत्र श्री सुलतान सुबेदार | 1 बोरी गेहूं |
| श्री रामनिवास सुपुत्र श्री सूरत सिंह | 50 किलो गेहूं |
| श्री धर्मपाल जी | 501 रूपये |
| श्री जगदेव सिंह | 110/- |
| श्री बिल्लु सुपुत्र श्री जगदीश | 1400/- |
| श्री काला सुपुत्र श्री ओमप्रकाश | 500/- |
| श्री अनिल सुपुत्र श्री संतराम थानेदार | 500/- |
| श्रीजितेन्द्र सुपुत्र श्री दलेल सिंह जी | 1 बोरी गेहूं |
| श्री राज सुपुत्र श्री राय सिंह टैन्ट हाउस | 1400/- |
| श्री महेन्द्र सिंह नम्बरदार | 50 किलो गेहूं |
| श्री समे सुपुत्र श्री रतन सिंह | 100/-, 50 किलो गेहूं |
| श्री धर्मपाल सुपुत्र श्री भूदेव सिंह | 40 किलो गेहूं, 501/- |
| श्री राजेन्द्र आकाश बोडी बिल्डर्स | 1400/- |
| श्री एस.एस. धर्मकांटा | 500 रूपये |
| श्री सुखवीर जी | 1 बोरी गेहूं |
| श्री मियां बरकल अली | 500/- |
| श्री रघुनाथ लाल एंडसेंस | 200/- |
| श्री अमन सिंह सुपुत्र श्री लाल | 50 किलो गेहूं |
| श्री बलजीत सुपुत्र श्री ख्यालीराम | 40 किलो गेहूं |
| श्री रणबीर सुपुत्र चरण सिंह | 500/- |
| श्री चांद सिंह सुपुत्र महासिंह | 500/- |
| श्री सुखवीर सुपुत्र टेकचन्द | 40 किलो गेहूं |
| श्री राजसिंह सुपुत्र मूलचन्द | 30 किलो गेहूं |
| श्री धर्मवीर सुपुत्र राममेहर | 201/- |
| श्री राममेहर सुपुत्र जयलाल | 50 किलो गेहूं |
| श्री उमेद सुपुत्र खजान सिंह | 100/- |
| श्री सत्यवान सुपुत्र सतवीर | 501/- |
| श्री रणबीर सुपुत्र जिले सिंह प्रधान | 1400/- |
| श्री बीरे सुपुत्र बलमत | 100/- |
| श्री सुरेश सुपुत्र ईश्वर सिंह | 502/- |
| श्री तेजपाल सुपुत्र जिले सिंह प्रधान | 2100/- |
| श्री कृष्ण कुमार सुपुत्र अजीत सिंह थानेदार | 1400/- |
| श्री कबूल सुपुत्र होशियार सिंह | 500/- |
| श्री सुरजमल सुपुत्र जीतराम | 200/- |
| श्री मांगेराम सुपुत्र जीतूराम | 100/- |
| श्री राजबीर सुपुत्र कर्णे | 100/- |
| श्री जयदेव सिंह | 220/- |
| श्री जगदीश सुपुत्र कर्णसिंह | 1100/- |
| श्री सतीश सुपुत्र महावीर | 2100/- |
| श्री बलवीर सिंह सुपुत्र जगन | 201/- |
| श्री मंजीत सुपुत्र श्री जयकिशन | 101/- |
| श्री कुम्कु सुपुत्र जयकिशन | 20 किलो गेहूं |
| श्री प. ईश्वर भारद्वाज सुपुत्र भगवान | 50 किलो गेहूं |
| श्री दिनेश कुमार सुपुत्र अनुप सिंह | 1500/- |
| श्रीलम्बु ठेकेदार | 500/- |
| श्री कृष्ण कुमार सुपुत्र धर्मसिंह | 500/- |
| श्री अजीत सिंह धर्मसिंह सुपुत्र मुंशीराम | 5100/- |

| | |
|---|---|
| श्री देव बिल्डर्स | 701/- |
| श्री सतपाल सुपुत्र करतार सिंह | 100/- |
| श्री वीरेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री सरदार सिंह | 1500/- |
| श्री विनोद कुमार सुपुत्र दिवानचन्द अग्रवाल | 700/- |
| श्री भगवती ओफसैट | 500/- |
| श्री हरपाल सुपुत्र हवासिंह | 500/- |
| श्री अनिल सुपुत्र राजेन्द्र | 1400/- |
| श्री नान्हा सुपुत्र रामफल स्वर्गवासी | 500/- |
| श्री अजीत सिंह सुपुत्र सूरत सिंह | 700/- |
| श्री विजयपाल सुपुत्र रामपत | 1400/- |
| श्री संजय सुपुत्र मेहरलाल | 1400/- |
| श्री राधेकृष्णा एसोसिएट्स | 21000/- |
| श्री रावत सिंह सुपुत्र भीमसिंह | 5100/- |
| श्री संतोष धर्मपत्नी रमेश | 1400/- |
| श्री अनिल | 1100/- |
| श्री मा. नरेन्द्र सुपुत्र रणबीर सिंह | 1400/- |
| श्री नरेश सुपुत्र श्री जगदीश | 700/- |
| श्री नरेश सुपुत्र श्री भामचंद | 1400/- |
| श्री इन्द्र जीत सुपुत्र स्व. राजसिंह | 1500/- |
| श्री जयपाल सुपुत्र दिवानसिंह | 40 किलो गेहूं |
| श्री धर्मबीर सुपुत्र रामनारायण | 101/- |
| श्री बीरे सुपुत्र रणसिंह | 500 रूपये |
| श्री ईश्वर सुपुत्र जयसिंह | 1 बोरी गेहूं |
| श्री दीपक सुपुत्र जयपाल | 50 किलो गेहूं |
| श्री सतबीर सुपुत्र लालचन्द | 100/- |
| श्री आजाद सिंह सुपुत्र विजय पाल | 1400/- |
| श्री ऋषिपाल सुपुत्र दरियाव सिंह | 700/- |
| श्री मामचन्द दराल | 505/- |
| श्री राजेन्द्र जी डबास घेवरा दिल्ली | 2100/- |
| श्री रमेश कुमार सुपुत्र श्री वीरेन्द्र सिंह | 35 मन चुड़ा |
| श्री श्रेष्ठ इन्टरनेशनल टीकरी कला | 1400/- |
| श्री दीप मेडिकॉज | 501/- |
| श्री बलवान सिंह नांगलोई दिल्ली | 1400/- |
| श्री रोहित धर्मकांटा | 1400/- |
| श्री वैध देवशर्मा जी | 2 बोरी गेहूं |
| श्री भूप सिंह डबास शनिमन्दिर | 1 टीन सरसो तेल |
| श्री प्रदीप जी दराल टीकरी | 2800/- |

## श्री विनोद जी द्वारा नजफगढ़ से अन्न प्राप्त

| | |
|---|---|
| श्री अशोक कुमार नांगलोई, नजफगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री दलवीर सिंह, गोपाल, नजफगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री अतर सिंह प्रेम नगर, नजफगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री रमेश चन्द्र शाहपुर जट, दिल्ली | 1 बोरी गेहूं |
| श्री ज्ञान चन्द, शाहपुर जट, दिल्ली | 1 बोरी गेहूं |
| श्री प्रेदा जी, नजफगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री अमित कु.सुपुत्र श्री अशोक कु., थाना रोड, नजफगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री स्व. पं. याद राम जी, नजफगढ़, बहादुरगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री विट्टू डागर सुपुत्र स्व. विजेन्द्र डागर, गोपाल नगर | 1 बोरी गेहूं |
| श्रीमती कान्ता देवी, रोशनपुरा, नजफगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री जोगेन्द्र अंतिल, सैक्टर-15, सोनीपत | 1100/- |
| श्री विनोद कुमार गुप्ता, मॉडल टाऊन, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री राजीव कुमार सहिल, वराही रोड़, बहादुरगढ़ | 1100/- |

## विविध वस्तुएं प्राप्त

| | |
|---|---|
| श्री अनुराग जाखड़ शास्त्रीनगर, बहादुरगढ़ | 51/-, 10 किलो आटा |
| श्री राहुल क्षुवात्रा | 50 किलो आटा, 5 किलो रिफाइन्ड, आधा किलो मसाला, 5 किलो चावल, 5 किलो नमक |
| श्री फरिश्ता सायं एण्ड चरखा मेडिकल, दिल्ली | 2 पेटी साबुन |
| श्री सतवीर ऋषिपाल भदानी | 2 बोरी गेहूं 20 मन |
| श्री राजकरण जी प्रधान आर्य समाज मन्दिर | |
| श्री भगवान जसौर खेड़ी द्वारा कबीर आश्रम, बहा. | 1 बोरी गेहूं |
| श्री रतनसिंह जी प्रधान निजामपुर, दिल्ली | ढाई बोरी गेहूं |
| श्री जीतराम जी आर्य, निजामपुर, दिल्ली | 50 किलो गेहूं |
| दी शिव ट्रबो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़ | 5 क्विंटल |
| श्री दलजीत सिंह राठी सुपुत्र श्री सुबे सिंह प्रधान परनाला बहादुरगढ़ | 501/-, 1 बोरी गेहूं |
| दी ट्रक यूनियन परनाला रोड़, बहादुरगढ़ | 4 क्विंटल गेहूं |
| श्री नताशा राठी सुपुत्र श्री कृष्ण कुमार, धर्मविहार,बहा. | 41 किलो गेहूं |
| श्री रवि अन्जनि प्रोपर्टीज, बहादुरगढ़ | 3 बोरी गेहूं |
| श्री दया किशन राठी 8 विश्वा, बहादुरगढ़ | 110 किलो गेहूं |
| श्री राज सिंह राठी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़ | 4 बोरी गेहूं |
| श्री महिपाल सिंह सु. करतार सिंह राठी, बहादुरगढ़ | 50 किलो गेहूं |
| प. जयसिंह दयानन्द नगर, बहादुरगढ़ | 60 किलो गेहूं |
| श्री मनुदेव शास्त्री दयानन्द नगर, बहादुरगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री सत्संग मण्डली मण्डी पार्क वाली, बहादुरगढ़ | 1 क्विंटल गेहूं |
| श्री श्यामलाल जी गुप्ता, काठमण्डी, बहादुरगढ़ | 2 बोरी गेहूं |
| श्री बिहारी लाल राजेन्द्र प्रसाद, बहादुरगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री धनश्याम दास जी अनाजमण्डी, बहादुरगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री राधेश्याम अशोक कुमार, बहादुरगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री देव रविन्द्र कुमार, बहादुरगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री लक्ष्मीचन्द मंगेश कुमार, बहादुरगढ़ | 125 किलो गेहूं |
| श्री मेघराज चन्द्रभान, बहादुरगढ़ | 1 बोरी गेहूं |
| श्री मातृराम जयप्रकाश अनामण्डी, बहादुरगढ़ | 50 किलो गेहूं |

| | |
|---|---|
| श्री हरदारी लाल, रोशनलाल, बहादुरगढ़ | 50 किलो गेहूं |
| श्री मांगेराम किशोरी लाल, बहादुरगढ़ | 50 किलो गेहूं |
| श्री हीरा लाल विरखभान, बहादुरगढ़ | 50 किलो गेहूं |
| श्री श्योप्रसाद श्री निवास | 800/- |
| श्री राम धनश्याम दास | 1 बोरी गेहूं |
| श्री बनारसी दास फकीराचन्द | 1 बोरी गेहूं |
| श्री बनारसी दास जुगल किशार | 1 बोरी गेहूं |
| श्री मित्तल ट्रेडिंग सोनी जी | 1 बोरी गेहूं |
| श्री रतन सिंह सोनी जी | 1 बोरी गेहूं |
| श्री स्टोक मार्किट कमेटी | 1 बोरी गेहूं |
| श्री सुरेश कुमार अग्रवाल ट्रेडिंग कमेटी | 1100/- |
| श्री बंसल खाद बीज भण्डार | 800/- |
| श्री चन्द्रराम सुपुत्र ब्रह्मा जी, माजरी गांव | 45 किलो जौ. |
| श्री धर्मवीर सुपुत्र छत्तर सिंह, माजरी गांव | 50 किलो गेहूं |
| श्री चन्दराम, माजरी गांव | 40 किलो गेहूं |
| श्री सन्तराम, माजरी गांव | 37 किलो गेहूं |
| श्री सुभाष चन्द्र सुपुत्र रणजीत, माजरी गांव | 100 किलो गेहूं |
| श्री महेन्द्र सिंह आर्य, माजरी गांव | 40 किलो गेहूं |
| श्री रणधारा, माजरी गांव | 20 किलो गेहूं |
| मा. करतार सिंह, माजरी गांव | 500/- |
| श्री नरेन्द्र सुपुत्र मांगेराम, माजरी गांव | 100 किलो गेहूं |
| श्री खजान सिंह सुपुत्र महासिंह, माजरी गांव | 100 किलो गेहूं |
| श्री समेराम सुपुत्र जयराम, माजरी गांव | 50 किलो गेहूं |
| श्री उमेद सिंह सुपुत्र जयराम | 10 किलो गेहूं |
| श्री उमेद सिंह सुपुत्र श्री मनफूल | 10 किलो गेहूं |
| श्री उमेद सिंह | 1 क्विंटल जौ |
| श्री धन सिंह | 15 किलो गेहूं |

## आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

| बैंक | नाम व खाता संख्या | बैंक कोड संख्या |
|---|---|---|
| इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर | आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471 | IFSC-A0211948 |

## भोजनार्थ प्राप्त दान

| | |
|---|---|
| श्री हुक्मसिंह बापडोला, दिल्ली | 4500 |
| पं. शिवनारायण जी गुप्ता, सैक्टर-6, बहा. | 1 समय का विशिष्ट भोजन |
| श्री वीरेन्द्र जी आर्य, दौलताबाद गुड़गांव | 1 समय का विशिष्ट भोजन |
| श्री कबीर आश्रम लाइनपार, बहादुरगढ़ | 1 समय का विशिष्ट भोजन, बच्चों में साबुन वितरण |

## गऊशाला पर दान

| | |
|---|---|
| श्री शिवनारायण जी गुप्ता सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 5100/- |
| श्री हीरेन्द्र दहिया सुपुत्र श्री भगतसिंह दहिया बराही रोड,बहा. | 1100/- |
| श्री भगतराम जी शर्मा सैक्टर-6, बहादुरगढ़ | 1100/- |
| श्री ईश्वर चन्द हलवाई काठमण्डी, बहादुरगढ़ | 600/- |
| श्री सोनू छिल्लर सुपुत्र दयानन्द छिल्लर बामनोली | 500/- |
| स्व. महेन्द्र सिंह फोगाट एवं समस्त परिवार दशधरा, दि. | 1100/-, 1 बोरी गेहूं |

## श्री चन्द्रभान चौधरी ( पूर्व डी.सी.पी. ) द्वारा एकत्रित दान राशि

| | |
|---|---|
| श्रीमती गांधार कला जी, पश्चिम विहार, न. दिल्ली | 500/- |
| श्री सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार नई दिल्ली-63 | 250/- |
| श्रीमती प्रवीन महेन्दीरत्ता जी विकास पुरी न. दिल्ली- | 150/- |
| श्री पुष्पलता वर्मा जी विकासपुरी न. दिल्ली | 150/- |
| श्री एस.के. मल्होत्राप जी, उत्तम नगर, न. दिल्ली | 150/- |
| श्री आर.सी. झा, विकासपुरी, न. दिल्ली | 150/- |
| श्री एच.पी. खंडेवाल जी विकासपुरी न. दिल्ली | 100/- |
| श्री सेठी परिवार विकासपुरी न. दिल्ली-18 | 100/- |

**मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर ( हरियाणा ), पिन**-124507 **द्वारा मयंक प्रिन्टर्स**, 2199/64, **नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली**-110005, **दूरभाष**–41548504, **चलभाष**–9810580474 **से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से** 15 **जून** 2013 **को प्रकाशित एवं प्रसारित।**

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें    ओ३म्    आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ योग साधना केन्द्र

आत्मशुद्धि आश्रम की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु सात दिवसीय पावन ऊर्जामय

# निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं बृहद्यज्ञ

## सोमवार 24 जून 2013 से रविवार 30 जून 2013 तक

शिविराध्यक्ष एव यज्ञ ब्रह्मा:-आचार्य राजहस मैत्रेय, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

## जीवन रूपान्तरण के लिए स्वर्णिम अवसर

❑ तनावपूर्ण वातावरण में सुखद व प्रसन्नता पूर्ण जीवन विज्ञान के लिए। ❑ महत्वाकांक्षा रूपी पागल दौड़ से उत्पन्न बैचेनी व अशान्ति की मुक्ति के लिए। ❑ दु:ख व सुख के विज्ञान की मनौवैज्ञानिक प्रक्रिया जानने हेतु। ❑ पारिवारिक सम्बन्धों में प्रेम व सौहार्द की स्थापना के लिए। ❑ आधुनिक व्यवस्था में स्वातन्त्र्य पूर्ण जीवन के लिए। ❑ मानवीय शत्रु काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि से मुक्ति के लिए। ❑ जगत के प्रति करूणा और आत्मिक सौन्दर्य के विकास के साथ प्रभु से सहज, सरल सम्मिलन के लिए।

आसन, प्राणायाम प्रशिक्षण:- **योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स, बहादुरगढ़**

प्रवक्ता: **डॉ. मुमुक्षु आर्य, नोएडा, आर्य तपस्वी सुखदेव जी, दिल्ली, आचार्य खुशीराम जी, दिल्ली, योगाचार्य रामजीवन जी, रंगपुरी, स्वामी रामानन्द सरस्वती, आचार्य रविशास्त्री**

भजनोपदेशक: **पं. रमेशचन्द्र जी कौशिक झज्जर, श्रीमती प्रीति आर्या स्नातिका गुरुकुल चोटीपुरा, योगसाधिका रामदुलारी बंसल और आश्रम के ब्रह्मचारी**

दिनचर्या: **सोमवार 24 जून 2013** को **शिविर उद्घाटन** सायं 4 बजे

**मंगलवार 25 जून 2013** प्रात: 5 से 7 बजे तक **ध्यान योग साधना पश्चात् आसन प्राणायाम प्रशिक्षण** 7:30 बजे से 10 बजे तक **यज्ञ भजन उपदेश**, 11 बजे से 12:30 बजे तक **योग दर्शन स्वाध्याय, शंका समाधान। मध्यांह्नोपरान्त** 3 बजे से 5 बजे तक **यज्ञ भजन उपदेश**, 5:30 से 7 बजे तक **साधना** रात्रि 8:30 बजे 9:30 बजे तक **शंका समाधान व मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन**

नोट- शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान कॉपी, पैन, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आए। ❑ भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से नि:शुल्क रहेगी। ❑ शिविरार्थी आने से पूर्व पर सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट है।

संयोजक: वानप्रस्थी ईशमुनि मो. 9812640989।

निवेदक

स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी
मुख्य अधिष्ठाता आश्रम, 9416054195

विक्रमदेव शास्त्री
व्यवस्थापक आश्रम, 9896578062

श्री सत्यानन्द आर्य
प्रधान ट्रस्ट

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
मन्त्री ट्रस्टी

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जिला झज्जर, हरियाणा-124507

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक
जून 2013
छपी पुस्तक – पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2012-14

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

## गौ दान

श्री रामेश्वर दास अग्रवाल कॉलोनी बहादुरगढ़ ने आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ को गौ दान कर अपने जीवन उत्थान के लिए पुण्य अर्जित किया है। इस अवसर पर उनके सुपुत्र श्री महेन्द्र जी, श्री नरेन्द्र जी तथा अन्य लोग उपस्थित रहें। हम उनके परिवार के लिए सुख, शांन्ति एवं स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हैं।

–विक्रम देव शास्त्री

## पुण्य स्मृति में दान

श्री बालकृष्ण शर्मा, श्री राजीव शर्मा, श्री सत्यपाल शर्मा सुपुत्र श्री श्याम लाल शर्मा नई बस्ती, बहादुरगढ़ ने अपनी पूज्या माता स्वर्गीया श्रीमती शान्ति देवी शर्मा की पुण्य स्मृति में आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ को 11000/– रूपये दान स्वरूप प्रदान किए हैं। आश्रम के सभी प्रकल्पों की ओर से समस्त पारिवारिक जनों को शुभकामनाओं सहित शुभाशीष।

–राजहंस मैत्रेय

## दानदाताओं से निवेदन

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ प. न्यास द्वारा स्थापित शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रूखनगर, गुड़गांव में शीघ्र ही भव्य भवन निर्माण हो चुका है जिसमें आप अपने निकटतम सम्बन्धी के नाम का पत्थर लगवा कर उनकी स्मृति चिरस्थायी करवा सकते हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | अण्डरग्राउन्ड साधना हाल सत्संग भवन 30' x 62' | लागत | 21,00,000/– |
| 2. | धर्मार्थ चिकित्सालय, आधुनिक सुविधाओं से सुजज्जित 30' x 43' | लागत | 15,00,000/– |
| 3. | भव्य यज्ञशाला (उपासना मन्दिर) 30' x 30' | लागत | 11,00,000/– |
| 4. | दो कमरे बरान्डा, किचन, लैटरीन, बाथरूम सहित 12' x 10' एक कमरे की | लागत | 2,50,000/– |
| 5. | साधकों के लिए अण्डर ग्राउन्ड 6 कमरे 12' x 9' | लागत | 1,00,000/– |

आप सभी के पुनीत सहयोग से यह महती कार्य वैदिक संस्कृति प्रचार प्रसार में अग्रसर हो सकेगा और आप भी धार्मिक कार्य के पुण्य के भागी बनेंगे। 5100/– रूपये से अधिक का पवित्र दान देनेवाले का नाम दान दाताओं की स्वर्णिम सूची में अंकित किया जायेगा।

सत्यानन्द आर्य (प्रधान) मो. 9313923155
दर्शन कुमार अग्निहोत्री (मंत्री) मो. 9810033799
स्वामी धर्ममुनि जी मो. 9813754084
ईशमुनि जी मो. 9812640989
राजहंस मैत्रेय आचार्य मो. 9813754084
विक्रमदेव शास्त्री मो. 9896578062